K-107
KS-150

'सुरत सैल असमान की लख पावे कोई संत'

(सत्संदेश जनवरी 1968 में प्रकाशित प्रवचन)

सत्संग शुरू होने से पहले पाठी ने कबीर साहब का यह शब्द पढ़ा:

सुलतान बलख बुखारे का।
जिनके ओढ़न शाल दुशाल – नौ दस्तारों तारे का।
सो तो लागे भार उठावन – नौ मन गुदड़ा भारे का।
सुलतान बलख बुखारे का।
जिनके खाने अजब सराहन – मिसरी खांड छुहारे का।
अब तो लागे बकत गुजारन – टुकड़ा सांझ सकारे का॥
सुलतान बलख बुखारे का।
जाके संग कटुक दल बादल – नौ सौ थोड़ा कंधारे का।
सो सब सज के भये औलिया – रस्ता धरे किनारे का॥
सुलतान बलख बुखारे का।
चुन-चुन कलियां सेज बिछाने – बिछौना न्यारे-न्यारे का।
सो मल धोने त्याग दिया है – देखो ज्ञान बिचारे का॥
सुलतान बलख बुखारे का।
सोलह सौ सहेलरी भी छाँडे – साहब नाम खुमारे का।
कहे कबीर सुनो औलिया – फक्कड़ भये अखाड़े का॥
सुलतान बलख बुखारे का॥

जिन्दगी का क्या भरोसा है। बड़े-बड़े बादशाह, राजे महाराजे दुनिया में आये और खाली हाथ चले गए। देखने वाली बात यह है, जिस्म (शरीर) है पहला संगी साथी जो हमारे साथ आता है मगर जाते हुए यह साथ नहीं जाता। प्रारब्ध कर्मों के अनुसार कोई अमीर, कोई राजा, कोई फकीर।

वैसे ही बेअख्तियार सामान बनते चले जाते हैं। इस लिए जिन को कर्मों के कानून से वाकफियत (ज्ञान) है वह क्या कहते हैं?

बनी बनाई बन रही, अवर बनेगी नाहिं।
तुलसी यह विचार के, मगन रहो मन माहिं॥

ये बेअख्तियार सामान बनते चले जाते हैं। एक आदमी मिट्टी को हाथ डालता है सोना बनता चला जाता है। उसी को दूसरा हाथ डालता है, सोने की मिट्टी बनती चली जाती है। इन्सान किसी हद तक आज़ाद भी है। जो आज़ादी उसे कर्मों के करने को मिली है उस से यह फायदा उठा ले। तो वह आज़ादी किस बात में है? हम प्रारब्ध कर्मों के आधीन कैसे बन गए? जिस्म (शरीर) का रूप बनने से। यह माया कहते हैं या भूल, यह कहाँ से शुरू होती है? शरीर से।

'एह शरीर मूल है माया।'

यह (मनुष्य) इस जिस्म का मकीन (निवासी) है, इसे चलाने वाला, मगर यह इस का रूप बन गया। इस लिए जिस्म के level से जिस्म के मोह में फंस गया। जो ताल्लुकात (सम्बन्ध) इस जिस्म के बने उन के मोह में लग गया। दुनिया सत्य भासने लग गई। असल में चीज़ कुछ और है। कुछ और ही नज़र आने लगी।

यह जितने सामान हैं इन का ताल्लुक (संबंध) जिस्म से है और यह प्रारब्ध कर्मों के अनुसार बन जाते हैं। अंत समय यह शरीर साथ नहीं जाता तो यह सामान भी धरे के धरे रह जाते हैं। जो प्रारब्ध कर्म अब बने यह कभी हम ने किए थे। हमारे ही कर्मों का यह reaction (फल) है ना। रेलवे लाईन है, डालते हुए चाहे उस का रुख किसी तरफ डाल दो। जब रेलवे लाईन पड़ जाएगी तो इंजन को उस के ऊपर ही जाना पड़ेगा। पीछे के लिए तो हम बंधन में हैं। आगे के लिए किसी हद तक हम स्वतंत्र हैं। वह क्या है? यह मसला (समस्या) कैसे हल हो? अगर हम इस भूल से निकल सकें। बड़ी भारी भूल है ना। हम शरीर का रूप बने बैठे हैं। यह शरीर matter (जड़ प्रकृति) का बना हुआ है। सारा जगत ही matter (जड़ प्रकृति) का बना हुआ है और—"Matter is changing"

जैसे एक दरिया हो। दरिया में एक बेड़ी (नाव) जा रही हो। उस में कुछ सवार हों। बेड़ी उस तरफ जा रही हो जिधर पानी बह रहा हो। बेड़ी की रफ्तार और पानी की रफ्तार एक सी है। एक आदमी उस बेड़ी से बाहर खड़ा हो जाता है। वह देखता है बेड़ी बह रही है। वह हमदर्दी (सहानुभूति) से पुकारता है, ''अरे भाइयो! तुम बह रहे हो।'' वे पानी की तरफ देखते हैं, एक तरफ बेड़ी की तरफ देखते हैं। दोनों खड़े हैं। जब दो चीज़ें एक ही रफ्तार से चल रही हों तो मालूम होता है वह खड़ी है। तो बड़ा भारी धोखा है न!

शास्त्र कहते हैं जगत असत्य है और आत्मा सत्य है। हम कहते हैं जगत सत्य है। आत्मा का पता ही नहीं। तो महापुरुष यह कहते हैं कि अगर तुम इस भूल से निकल जाओ, तुम जीते-जी इस पिंड से, शरीर से ऊपर आना सीख जाओ, Self-analysis कर सको Body-conscionsness के ऊपर rise above कर सको, जड़ और चेतन अलहदा कर सको, तुम अपने आप अनुभव करोगे कि मैं जिस्म नहीं। अब तो बुद्धि के लिहाज़ से कहते हो कि मैं मन नहीं, प्राण नहीं, बुद्धि नहीं। यह मेरा कोट है। हम कोट को उतार भी सकते हैं न। हम कहते हैं यह मेरा तन है। कभी तन को भी उतारा है आप ने ? तो:

'एह शरीर मूल है माया।'

इस शरीर से ही सारी भूल शुरू होती है।

तो महात्मा जब मिलते हैं वह कहते हैं, भई इस शरीर से ऊपर आ जाओ। Self analysis करो। अपने आप की तुम को होश आएगी। इस भूल से जिस में तुम जा रहे हो, इस से निकलो। खड़े हो जाओ। तो सब महापुरुषों ने इस बात पर रोशनी डाली है। कहते हैं दरख्त को काटना हो तो जड़ से काटना चाहिए। जहां से भूल शुरू हुई है वहीं भूल कटेगी। अगर तुम जिस्म न रहो, जिस्म से ऊपर आना सीख जाओ, यह सारी भूल निकल जाएगी कि नहीं? यह मोह माया जाती रहेगी, नहीं तो सारा संसार ही मोह माया में सो रहा है।

मोह माया सब्बो जग सोया, एह भरम कहो कित जाई॥

यह भ्रम है। भ्रम किस को कहते हैं? जो चीज़ असल किसी और रंग में हो और नज़र किसी और रंग में आ रही हो, इस का नाम भ्रम है। हम जिस्म नहीं। जिस्म का रूप बन गए और उसी के level से (नज़र से) सब कार्य व्यवहार कर रहे हैं। तो सारी भूल का यही (शरीर) मुकाम है। तो महात्मा इस लिए कहते हैं अरे भई तू छोड़ पिंड और चल ऊपर। जीते जी मरना सीख। पिंड से ऊपर आना सीख। तेरी यह भूल निकल जाएगी। तू इसी दुनिया को किसी और रंग में देखेगा। जिस्मानी (शारीरिक) ताल्लुकात (संबंध) चन्द रोज़ा (चार दिन के) हैं, हमेशा किसी के रहे न रह सकेंगे, और बदलते रहते हैं यह। जो आज अमीर है कल गरीब है। जो आज गरीब है कल अमीर है। कोई लगातार है, किसी के मरते रहते हैं, किसी के पैदा होते रहते हैं।

तो यह प्रारब्ध कर्मों के अनुसार बेअख्तियार यह सामान बनते हैं। इस में तो तब्दीली नहीं हो सकती और ना ही संत महात्मा इस में दखल देना चाहते हैं क्योंकि अगर वैसे किसी महापुरुष के पास आने से क्या फायदा है? फरमाते हैं, हे गुरु जो कर्म न नासे तो तेरे चरणों में आने का फायदा ही क्या है?

जगत गुरा जे करम न नासै।
सिंह सरन कंत जाइए जे जुंबक ग्रासै॥

अर्थात् शेर की शरण में जाने का क्या फायदा है अगर वहाँ भी गीदड़ आ कर भभकियां मारे ? तो वह महापुरुष क्या करता है? Future (आगे) के लिए कहता है कि जीवन नेक पाक बनाओ, सदाचारी बनाओ, Ethical life बनाओ। अहिंसा परमोधर्मः, सत्य को धारण करो। नेक पाक ख्याल रखो। सब के अंतर परमात्मा है, किसी से नफरत न करो, निष्काम सेवा करो। यह है future life, आगे का जीवन। बाकी प्रारब्ध कर्म भोग लो अपने अपने। जो संचित कर्म हैं वह self analysis करके (जड़ चेतन को अलग करने से) कट जाते हैं। वह (महापुरुष) पिंड से ऊपर आने का राज़ (भेद) दे देते हैं।

"Where the worlds philosophies end there
the religion starts."

जहां दुनिया के फिलसफे खत्म हो जाते हैं वहां परमार्थ की 'क', 'ख' शुरू होती है। इस लिए पिंड से ऊपर आने का पहले ही दिन सबक दिया जाता है। How to rise above body-consciousness? और Inner higher contact लेकर जब उस के महारस को पाता है, इंद्रियों के भोग रस फीके पड़ जाते हैं। बस, आना जाना खत्म हो गया कि नहीं? तो यह सारी भूल का मूल यह जिस्म है। जिस्म नहीं, जिस्म से भूल शुरू होती है यह कहो। महापुरुष भी तो जिस्म रखते हैं। मगर वह जब चाहें कोट की तरह इस को उतार कर ऊपर आ सकते हैं। यह एक ऐसा मज़मून है जो हर एक महापुरुष ने हमारे सामने रखा है। आगे हर एक महात्मा की, किसी न किसी की वाणी ली जाती है। आज आप के सामने तुलसी साहब की वाणी आ रही है:

"सौ सियाने एक ही मत।"

जिन्होंने अनुभव को पाया है उन सबकी तालीम एक है। सिर्फ ज़बानदानी (भाषा) का फर्क है, तरज़े बयान (वर्णन शैली) का फर्क है। गौर से सुनिए वह क्या फरमाते हैं:

सुरत सैल असमान की लख पावे कोई संत।

तुलसी साहब फरमाते हैं हमारी सुरत आसमान का सफर कर सकती है। किस की? संत की। संतों की रूह पिंड को छोड़कर आसमानों का सफर कर सकती है। इस लिए वह unattached (निर्लेप) होते हैं। दुनिया में और दूसरों की, किन लोगों की सुरत आसमानों का सफर कर सकेगी? जो संतों के पास बैठेंगे।

उन की (संतों की) तालीम, पराविद्या हमेशा से रही। अपराविद्या को वह छेड़ते नहीं। वह कहते हैं इस से फायदा उठा लो। दो किस्म की विद्याएं हैं। एक अपराविद्या, एक पराविद्या। अपराविद्या में ग्रंथों पोथियों का पढ़ना पढ़ाना, पूजा पाठ, रस्म रिवाज, तीर्थ यात्रा, हवन दान वगैरह शामिल है। ग्रंथों पोथियों के पढ़ने से शौक बनता है। महापुरुषों की अभी हम वाणी

पढ़ रहे हैं कि संतों की रूह आसमानों का सफर करती है फिर हमारा भी चित्त आता है कि हमारी रूह भी आसमान का सफर करे। भूल का मुकाम जिस्म से शुरू होता है। अगर पिंड से ऊपर आना सीख जाएं तो भूल से निकलेंगे कि नहीं? तो फरमाते हैं कि आसमान की सैर हमारी सूरत, आत्मा कर सकती है। किन की? संतों की।

परमात्मा ने इन्सान बनाए, आत्मा-देहधारी। इस को देह, जिस्म मिले हुए हैं। यह स्थूल जिस्म है, इस का ताल्लुक स्थूल दुनिया से है। इस के अंतर सूक्ष्म जिस्म है, सूक्ष्म दुनिया में फिर सकता है। इस के अंतर कारण जिस्म है, कारण दुनिया में विचर सकता है। तो इस की 'क', 'ख' कहां से है? जब पिंड से ऊपर जाना सीखे। तो पहला सबक जो अनुभवी पुरुष देते हैं – वह अपराविद्या से तो फायदा उठाने को कहते हैं, वह नई समाजें नहीं बनाते न पुरानी समाजों को तोड़ते हैं। हमारे हजूर फरमाते हैं:

"कुएं तो बहुत आगे ही लगे पड़े हैं
और नये कुएं लगाने की क्या ज़रूरत है ?"

तो संत महात्मा जब भी आते हैं, वह आत्मा की level (नज़र) से देखते हैं। इस लिए सब समाज उन की अपनी हैं। सब कौमें उन की अपनी हैं। सब मुल्क अपने हैं क्योंकि वह आत्मा की नज़र से देखते हैं।

अब जिस्म से ऊपर आने की साईंस, क्या यह कोई साईंस है? भई पुरातन से पुरातन साईंस है वह। आप ने सावित्री का जीवन कई बार पढ़ा होगा। उस में आता है कि किसी ज्योतिषी ने यह ज्योतिष लगाया कि उस का पति फलाने दिन (तारीख मुकर्रर की) दरख्त से गिर कर मर जाएगा। तो जब वह दिन आया तो सावित्री अपने पति के साथ जंगल में चली गई। जब वह वक्त आया वह दरख्त काट रहा था। जिस शाखा (टहनी) पर खड़ा था वही कट गई। बड़ी सख्त चोट आई, जान पर बन गई। तो लिखा है कि सावित्री ने उस के सिर को अपनी गोद में ले लिया। यमराज आए उस की (सावित्री के पति की) रूह को ले कर चल पड़े। इस के बाद और भी कुछ ज़िक्र आता है जिस पर हम लोगों ने कभी

तवज्जो नही दी। उस के बाद सावित्री भी अपने जिस्म को छोड़कर उस के पीछे चल पड़ी। लंबे चौड़े किस्से के बाद, वापस आई। यह कोई साईंस थी ना। कोई नई साईंस नहीं, पुरातन से पुरातन है, सनातन से सनातन है मगर हम भूलते रहे। महापुरुष आ कर इसे ताज़ा करते रहे। मौलाना रुम फरमाते हैं:

चूंजे हिस बेंरु न्यामद आदमी।
बाशद अज़ तस्वीरें गैबी अज़नबी।।

जब तक हम हिंसों से ऊपर नहीं आते, ऊपर के मंडल के हालात से नावाकिफ (अनभिज्ञ) रहते हैं। मरते वक्त क्या होता है? रूह पिंड से ही ऊपर आती है? उस के अंतर सूक्ष्म शरीर है, कारण शरीर है। इस लिए कहते हैं कि अगर तू हकीकत को देखना चाहता है तो इस जिस्म से ऊपर आ, इस भूल से निकल। इन इंद्रियों के घाट से ऊपर आ। इंद्रजाल है मन का। मन के साथ हम जुड़े पड़े हैं, इस लिए इस इंद्रजाल में हम फंसे पड़े हैं। पहले इंद्रजाल से निकलो, मन को हटाओ। इंद्रियों से ऊपर आओगे तो जिस्म खत्म हो जाएगा ना, यह स्थूल जिस्म, तो हकीकत कुछ कुछ आश्कार (खुलने) होने लगेगी। तो इस लिए फरमाते हैं:

"ए दिल अगर अज़ गुबारे तन पाक शवी।
तू रुहे मुज़स्समी बर अफलाक शवी।।

कि ऐ दिल अगर जिस्म के गुबार से तू पाक हो जाए, तू रुह हे रूह, आसमानों पर सफर कर सकेगी। यह मुसलमान फकीर कहते हैं। तो आसमानों पर सफर करना बाकायदा एक साईंस है। उस को हम भी सीख सकते हैं। किस की सोहबत में? जो आसमानों पर सफर करते हैं।

अर्शेस्त नशेमने तो शरमत बादा।
कानी ओ मुकीमी खते खाक शवी।।

कि ए रूह तेरे रहने की जगह अर्श (आस्मान) है। कहां की तू रहन वाली और कहां मिट्टी पानी में फंस रही है। यही स्वामी जी महाराज ने फरमाया:

तेरा धाम अधर में प्यारी। तू धर संग रहत बंधानी॥

कि ऐ आत्मा तेरा वह मुकाम है जहाँ घर नहीं, matter नहीं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण, इस से ऊपर आ। कहां की तू रहने वाली, कहां इस जिस्म से बंधी पड़ी है। तो इस लिए:

आं तुई के बे बदन दारी बदन।
पस मतरसद जिस्मो जां बेरु शुदन॥

अरे भाई तू वह है जिस का इस जिस्म के बगैर कोई और जिस्म भी है, इस लिए पिंड से ऊपर आने से तू डर नहीं।

सेंट प्लूटार्क कहता हैं कि, ''जैसे अंत समय रुह पिंड को छोड़ते हुए तजरबा करती है, ऐसे ही जो mystery of the beyond में initiate किए जाते हैं, वह भी वैसा ही तजरबा करते हैं पिंड को छोड़ने का।''

मरिए तो मर जाइए फूट पड़े संसार।
ऐसी मरनी जो मरे दिन में सौ सौ बार॥

सारे महापुरुषों ने इसका ज़िक्र किया। अगर हम मरना सीख जाए, ऐसा मरना, जीते जी मरना, तो आना जाना खत्म हो जाए। कबीर साहब ने इसी लिए फरमाया:

मरता मरता जग मुआ, साचा मुआ न कोय।

सारा जहान मर रहा है। जिस्म का रूप बना रहा, अंत समय रूह ने तो निकलना ही है। अगर जीते जी निकल कर ऊपर के रस को पाले?

All glory and beauty lies within you.

उस रस को पा जाए, बाहर जिस्म के रस फीके पड़ जाएं। फिर वह दुनिया में क्यों आएगा?

तुलसी साहब ने फरमाया कि जब मैं पिंड को छोड़ कर ब्रह्मंड में आया तो बड़ी भारी शांति थी, बड़ा आला (सुंदर) मुकाम था। कहते हैं जब मैं ब्रह्मंड से ऊपर चढ़ा और पारब्रह्म में आया तो मालूम हुआ ब्रह्मंड मेहतरों की टट्टी है। स्थूल से सूक्ष्म ज्यादा खूबसूरत है, सूक्ष्म से कारण और कारण से ऊपर। जैसे-जैसे रुह सफर करती है, गिलाफ (पर्दे) उतारती जाती है, वैसे-वैसे सुखी, शांत आनंदमय होती चली जाती है। तो सारे

महापुरुष इस बात पर ज़ोर देते चले आए कि इस से (शरीर से) ऊपर आने से घबराना नहीं चाहिए।

ऐ दिल जे जां गुजर कुन। ता जाने जां ब बीनी॥

कि ऐ दिल तू इस जिस्म से निकलना सीख ताकि जो तेरी रुह की भी जान है उस को तू देखने वाला बन जाए। तू इस जिस्म का रूप बना बैठा है। उस को तू देख नहीं सकता।

बिगुजार ईं जहां रा। ता आं जहां बबीनी॥

कि इस दुनिया से ऊपर था, अगले जहान का सफर करने लग जाएगा। तुम देखने वाले बन जाओगे। अभी तो पढ़े पढ़ा का सौदा है। मालूम नहीं क्या है, शायद यह सब अफसाना (किस्सा कहानी) ही है। अरे भाई कहानी नहीं है। महापुरुष जब मिलते हैं तो पहले ही दिन आप को यही तालीम देते हैं। बिठा कर, पिंड से ऊपर लाकर अंतर की आंख खोलते हैं। जो महापुरुष यह तजरबा दे सकता है, उस का नाम साधु, संत और महात्मा है। अपराविद्या के साधन तो कोई सिखा सकता है। लैक्चर, कथा ज्ञान भी कोई भाई कर सकता है। दो चार छः महीने ट्रेनिंग कर लो, लैक्चर देने लग जाओगे। यह काम आलिमों का नहीं। यह आमिलों (अनुभवी पुरुषों) का काम है। यह किन हस्तियों के बयान आप के सामने रखे जा रहे हैं? उन लोगों के जिन्होंने इस को कर के देखा है।

सुन संतन की साची साखी।
सो बोलें जो पेखें आखी॥

कि तुम संतों की शहादत को सुनो, वह सच्ची है। क्यों? वे वह कुछ बयान करते हैं जो उन्होंने देखा है। हम लोग किताबों में पढ़ा पढ़ाया बयान करते हैं? वे देख कर बयान करते हैं।

कबीर साहब एक पढ़े लिखे, आलिम फाजिल पंडित से मिले। तो कहने लगे ऐ पंडितः

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।
मैं कहता हूँ आंखन देखी। तू कहता कागत की लेखी॥

कि तेरा और मेरा मन कैसे मुत्तफिक (सहमत) हो सकता है? मैं

तो जो कुछ देख रहा हूँ वह बयान कर रहा हूँ। तू किताबों के हवाले दे रहा है।

तो मैं यही अर्ज़ कर रहा था कि यह अनुभवी पुरुषों का मज़मून है और ऐसे ही महापुरुषों की महिमा वेद शास्त्र, ग्रंथ, पोथियां गाती रही, acting, posing का सवाल नहीं। स्वांग बनने का सवाल नहीं, लैक्चर देने का सवाल नहीं। पिंड से ऊपर आने का सवाल है। अंतर की आंखें खुलने का सवाल है।

'संत संग अंतर प्रभ डीठा।'

देखने का सवाल है। हमारे हजूर फरमाया करते थे:

"महात्मा बड़े हैं। उपदेश देने का क्या है कोई चरखा कातने वाली लड़की भी दे सकती है। सवाल तो यह है क्या मिलता है? क्या अनुभव होता है?"

सत्गुरु मिले तां अक्खी देखे घरे अंदर सच पाए॥

सारे महापुरुष यही कहते हैं। तो बड़े प्यार से समझाते हैं कि भई तू इस जिस्म से निकलना सीख। फिर नज़र देते हैं कि अरे भई:

तू वतन हैवानी।

कि तू जिस्म कर के तो हैवान (पशु) है।

बजानी अज मलिक।

सुरत कर के तू फरिश्ता है। उस परमात्मा की अंश है ना।

'कहो कबीर एह राम की अंश।'

परमात्मा महाचेतन्यता का समुद्र है। हमारी आत्मा उस ज़ाते हक (सच्चिदानंद प्रभु) का कतरा है। यह भी चेतन्य स्वरूप है। जब तक जड़ और चेतन अलहदा न हो, अपने आप का अनुभव न हो, हकीकत को कैसे देखेगा? क्योंकि आत्मा ही ने तो अनुभव करना है परमात्मा को। इस लिए स्वामी जी महाराज और सब महात्माओं ने इस बात पर जोर दिया:

चेतन रूप विचारो अपना।

अपने चेतन रूप को जानो। तुम जिस्म नहीं। फिर सवाल यह आता है कि जिस्म हमें मिले क्यों?

'ता रबी हम बरजमीं हम बर फलक।'

हम को यह जिस्म इस लिए दिया है, जब चाहे इस दुनिया में काम करें, सूक्ष्म देह इस लिए दीया है, जब चाहें परलोक में काम करें, कारण देह इस लिए दीया है जब चाहें उन देशों में सफर करें और जब चाहें तीनों के पार चले जाएं। इस लिए परमात्मा ने तो बड़ी बरकतें हम को दीं कि जब चाहो यहां काम करो, जब चाहो आगे करो, जब चाहो और आगे करो और जब चाहो इन सब के पार परमात्मा की गोद में पहुँच जाओ। हकूक तो, privileges तो बड़े दिए मगर हम भूल गए। हमारी बाहर की दुकान तो खुली है, इस से परे जाने का पता नहीं।

जब अनुभवी पुरुष मिलते हैं तो हमें यह तालीम पहले ही दिन बिठा कर देते हैं कि छोड़ो पिंड और चलो ऊपर। अंतर में अनुभव को खोलते हैं:

तू काबिले खाकी फतादा बर ज़मीं।
रुहो गरदां बरां चरखे बरीं।।

यह मिट्टी का जिस्म तो ज़मीन पर है और रुह आसमानों का सफर करती है। यही तुलसी साहब कह रहे हैं, यह मौलाना रुम साहब कह रहे हैं। वही शम्स तबरेज़ साहब कह रहे हैं, वही कबीर साहब और और महापुरुष कह रहे हैं। तो यह कोई नई साईंस नहीं मगर हम इसे भूल गये।

अब आप देखेंगे कि संतों की तालीम और आम सामाजिक तालीम में क्या फर्क है? वह (संत) सामाजिक तालीम की भी प्रौढ़ता करते हैं क्योंकि इंसान social being (मिल कर बैठने वाला जीव) है, किसी न किसी समाज में उस का रहना जरूरी है, नहीं तो corruption (भ्रष्टाचार) फैल जायगा मगर उस से, अपराविद्या से, हम फायदा उठाएँ। ग्रंथों पोथियों को पढ़ें उन में क्या दिया है। यह जो हम पढ़ रहे हैं यह दिया है। अगर वह (संत) जा सकते हैं (आसमानों पर) तो हम भी जा सकते हैं। कहते हैं कि परमात्मा को कौन जानता है ? Christ (यसू मसीह) से सवाल किया गया। उन्होंने कहा:

Son knows the father.

कि उसका बच्चा उसे जानता है। जितने अनुभवी पुरुष हैं वह सब परमात्मा के बच्चे होते हैं।

They are all children of light.

मैं पश्चिम में जब गया तो उन्होंने पेश किया कि क्राईस्ट खुदा का बेटा था। मैंने कहा ठीक मगर और कोई महात्मा यही बात कहे तो? फिर वह भी मानना चाहिए। क्योंकि आप लोगों को दूसरों के ग्रंथों पोथियों से लाइल्मी (पता नहीं) है इस लिए आप कहते हैं कि क्राईस्ट ही खुदा का बेटा है। अरे भाई सारे महापुरुष जो आए वह सब खुदा के बेटे थे। मैंने गुरु अर्जुन साहब की वाणी पेश करीः

पिता पूत एके रंग लीना।

कि पिता और पुत्र एक ही रंग में हैं। फिर कहाः

'पिता पूत रल कीनी सांझ।'

तो ऐसे महापुरुष जब भी आते हैं तो उन का जिस्म तो ज़मीन पर सफर करता है, रुह आसमानों पर सफर करती है, at will, जब चाहे। यही फज़ीलत (बड़ाई) है उन में। वही हकूक हमें भी हासिल हैं मगर हम जिस्म और जिस्मानियत और इंद्रियों के भोगों रसों और बाहरी attachment (ताल्लुकात) से इतने इस (जिस्म) का रूप बन जाते हैं कि अपने आप की होश ही नहीं। तो महात्मा हमेशा ही यह कहते हैंः

'बिगुजर बर कुए आओ गिल।'

पानी और मिट्टी का बना हुआ है यह जिस्म, कहते हैं इस मिट्टी और पानी की गली से निकल। इस से निकलना ही परमार्थ की पहली सीढ़ी है।

'दर रौ बकसरे जानो दिल।'

अंतर महल है तेरे। उन में हासिल हो। जिस्म से ऊपर आएगा तो महल में जाएगा ना।

If you shut the outer doors of thy body
you will enter the kingdom of God.

अगर बाहरी जिस्म से जो सूरत फैलाव में जा रही है उस से हट कर

ऊपर आओगे तो परमात्मा की बादशाहत में दाखिल हो जाओगे। इस लिए कहाः

Except ye be born anew,
ye cannot enter the kingdom of God.

कि जब तक तुम नई दुनिया में पैदा नहीं होते, पिंड से ऊपर नहीं आते, तुम परमात्मा की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते।

परमात्मा की बादशाहत कहां से शुरू होती है? पिंड से ऊपर चल कर। वहां भी दर्जे हैं, lower and higher plane हैं। सूक्ष्म है, कारण है, महा कारण है और इस से भी परे। आप देखे कि महापुरुषों की क्या तालीम है? हम तुलसी साहब की वाणी रोज़ पढ़ छोड़ते हैं। कितनी खूबसूरती से बयान किया है कि हमारी आत्मा आसमानों का सफर कर सकती है। किन की? संतों की या जिन की सफर करती है वह हमें यही तालीम देते हैं कि तुम भी चलो।

संत और पारस में बड़ो अंतरो जान।
ओह लोहा कंचन करे, ओह कर लें आप समान॥

संत और पारस में बड़ा भारी फर्क है। पारस लोहे को सोना बनाता है, पारस तो नहीं बनाता। संत कहता है मैं सफर करता हूं चल तू भी मेरे साथ सफर कर। कितनी भारी बख्शिश है। सो तुलसी साहब फरमाते हैंः

'सुरत सैल आसमान की लख पावै कोई संत।'
तुलसी जग जाने नहीं अति उतंग पिया पंथ॥

तुलसी साहब फरमाते हैं कि जगत के लोग इस से बेखबर हैं, इस साईंस से। वह (संत) क्या कहते हैं कि अरे भई इस जिस्म के साथ तेरा और भी जिस्म हैं। जब तक :

'जीस्तन रा तू अज आबोगिल बिशनस्त।'

अपनी ज़िंदगी को इस मिट्टी और पानी से अलग कर के जानो तुम कौन हो। यह जिस्म तो नहीं न। आखिर छोड़ना पड़ता है कि नहीं? जब तक तुम इस के साथ हो इस जिस्म की दुनिया आबाद है।

तिच्चड़ वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल॥
जां साथी उठि चल्लेया तां धन खाकुराल॥

मिट्टी में मिला दिया जाता है यह जिस्म। तो हम जिस्म तो नहीं न। जो जिस्म जिस्मानियत में फंसे पड़े हैं वह उस हकीकत से बेखबर हैं। सारी दुनिया ही जिस्म का रूप है:

मोह माया सब्बो जग सोया, एह भरम कहो कित जाए॥

यह भ्रम कैसे जा सकता है। कोई अनुभवी पुरुष बिठा के हमें ऊपर लाए इस जिस्म से। हम देखें जिस्म बैहिस हो गया, अंतर की आंख खुले, नई दुनिया में पैदा हों, तब काम बने न। तो कहते हैं क्या करो:

जीस्तन रा तू अज आबोगिल बिशनस्त।
तो अजीं आबो गिल कब दारी॥

इस मिट्टी और पानी के सिवा तेरा एक कोट भी है जो तू पहने हुए हैं। वह सूक्ष्म है, उस से तू बेखबर है।

ब रवी हर शब अज फना वेग।
के जुज ईं खाको दस्तो पा दारी॥

मिसाल देते हैं कि रात को तुम सोते हो। तुम नई दुनिया में काम करते हो सपने में। यह जिस्म तो नहीं करता न। वह सूक्ष्म देह इस जिस्म से निकल कर ऊपर के मंडल में काम करती है। अगर जीते जी तुम इस जिस्म से निकलना सीख जाओ, रोज़ चलो, फिर मौत का क्या खौफ रहेगा? मौत का खौफ तो तभी है क्योंकि हम जिस्म को छोड़ना नहीं सीखे। गुरु अमरदास जी ने फरमाया:

मरने ते सब जग डरे जीवेया लीड़े सब कोय।
गुर परसादी जीवत मरे तां हुक्मे बूझे कोय॥

मरने से सारा जहान भयभीत हो रहा है, हाय मौत, हाय मौत। जिन को होश आती है न वह इस तरफ से तवज्जो हटा लेते हैं। अभी बलख बुखारे का ज़िक्र कबीर साहब कर रहे थे कि वहां के बादशाह, इब्राहिम अधम, जब इस की हकीकत खुली कि यह सब फना (नाशवान) है, घर बार बादशाही छोड़ कर भाग गए। कई वर्ष हकूमत चलती रही पीछे।

एक दिन दरिया के किनारे बैठे हुए नज़र आ गए। अमीर वज़ीर सब भागे। चरणों में पहुँचे कि महाराज अपनी बादशाहत संभालो। कहने लगे, इस बादशाहत में क्या है ? वह बोले, नहीं महाराज, आप ज़रूर चलें। कहने लगे, अच्छा मैं चलूंगा अगर मेरी एक बात तुम मान लो कि यह सूई मैं दरिया में फेकूंगा। इस को तुम निकलवा दो। सूई दरिया में गिर गई। कैसे निकले। वह बोले कि महाराज आप कहे तो ऐसी सैकड़ों सुईयाँ पेश कर दें। कहने लगे, मुझे तो वही सूई चाहिए। तवज्जो दी एक मछली वही सूई पकड़े हुए आ गई। कहने लगे, लो भई तुम एक छोटी सी बादशाहत की बात करते हो। सारी दुनिया में मेरी बादशाहत है। उस बादशाहत के मुकाबले में वह दुनिया की बादशाहत हेच (तुच्छ) है जिस के लिए हम इतना झगड़-मगड़ रहे हैं। जब वह हकीकत मिलती है आखिर कुछ है भई। अगर उस राज़ का हमें पता नहीं इस लिए दुनिया में मस्त पड़े हैं।

मरने ते सब जग डरे जीवेया लोड़े सब कोय॥

हर कोई यह कहता है कि मैं दो घंटे और जी लूं। क्यों? इस के दो कारण हैं। एक तो हमें मरना नहीं आया, मरने के वक्त रुह (आत्मा) सिमट कर आँखों के पीछे निकलती है। आपने मरते वक्त आदमी देखे हैं जो हर वक्त जिस्म का रूप बने रहते हैं? धिड़कते हैं, टांगे मारते हैं, बाजू मारते हैं, आंखें टेढ़ी होती हैं, कभी ऊँची होती है कभी नीची। किस मुसीबत का सामना करना पड़ता है? कोई उस वक्त मदद नहीं कर सकता। नज़दीकी से नज़दीकी रिश्तेदार भी खड़े के खड़े रह जाते हैं। He is past our care. यही कहते हैं और क्या। इस लिए संत महात्मा कहते हैं कि भई तुम्हें इस मरहले से तो निकलना ही है अब ही निकलना शुरु कर दो। आप भाइयों को अभ्यास के लिए क्यों जोर दिया जाता है? जीते जी छोड़ना सीख लो, मौत का खौफ न रहे।

"गुरमुख आए जाए निसंक।"

हम तो अब डर रहे हैं न। कबीर साहब कहते हैं:

जिस मरने ते जग डरे मेर मन आनंद।
मरने ही ते पाइए पूर्ण परमानंद॥

जिस मरने का नाम सुन कर दुनिया भयभीत होती है, कहते हैं मैं सुन कर बड़ा खुश होता हूं क्योंकि मर कर हमेशा के लिए उस में वासिल (लय) हो जाऊँगा। मौलाना रुम साहब का अंत समय आया। कई फकीर आए बीमार पुरसी के लिए। मिलकर दुआ की कि ऐ खुदा इन्हें शफा दे। आँख खोली। कहते हैं, यह शफा तुम्हें मुबारिक रहे। कहते हैं क्यों? कहते हैं कि आगे तो जिस्म छोड़ कर जाया करते थे। अब यह जिस्म का पर्दा जो हायल था (बीच में रुकावट था), यह तो खत्म होने वाला है। तुम नहीं चाहते मैं हमेशा के लिए उस में वासिल (लय) हो जाऊं? इस लिए कहा है:

संतन को क्या रोइए जो अपने ग्रह जाएं।
रोवो साकत बापड़े जो हाटो हाट बिकाएँ॥

बाबा जयमल सिंह जी महाराज थे। जब जाने का वक्त आया तो कहने लगे, खबरदार मुझे जाने से मत रोकना। मैं अपने घर जा रहा हूँ। देखो उन की मौत और हमारी मौत में कितना फर्क है। क्या फर्क है? यही फर्क है। हम ने पिंड को छोड़ना नहीं सीखा जो उनका पहला कदम है। समर्थ पुरुष हमें रास्ता भी दे देता है बल्कि तजरबा (अनुभव) भी दे देता है कैसे ऊपर आ सकते हो। अंतर की आंख भी खोलता है। रास्ता मिलने पर भी हम कामयाब नहीं होते या वक्त नहीं दे सकते तो यह बदकिस्मती है कि नहीं? तो कहते हैं कि जगत के लोग इस से बेखबर हैं।

"तुलसी जग जाने नहीं अति उतंग पिया पंथ।"

उस तरफ जाने का रास्ता बड़ा तंग तार है, तारीक है। अंधेरे में चलता है वह रास्ता। दो ही मार्ग है दुनिया में, एक प्रेय मार्ग है एक श्रेय मार्ग, एक इंद्रियों के फैलाव का, यह है तो बड़ा प्यारा मार्ग मगर जितना फैलाव में चले जाओ निकलने का कोई रास्ता नहीं। दुनिया में ही attached (बंधा) रहता है सारी उम्र। नतीजा यह होता है:

जहां आसा तहां वासा।

कब से हम उस परमात्मा की गोद से जुदा हुए। अभी तक वापस नहीं पहुँचे।

'जहाँ आसा तहां वासा।

तो महापुरुष कहते हैं तुम पिंड से निकलना सीखो भई, पहली बात, जहां से भूल शुरू हुई, जहां से हम दुनिया से लंपट होना सीखे, मोह माया में सो गए, पहले दिन उस को तोड़ते हैं। चल भई, पिंड छोड़ और ऊपर चल। उसकी रोज़ रोज़ कमाई कर।

नानक जीवंदेयां मर रहिए, ऐसा योग कमाइए॥

तो गुरु अमरदास जी फरमाते हैं:

मरने ते सब जग डरे जीवेया लोड़े सब कोय।
गुर परसादी जीवत मरे तां हुक्मे बूझे कोए॥

कोई अनुभवी पुरुष मिल जाए, यह जीते जी मरने के (भेद) को जान जाए, जीते जी मरना सीख जाए, पिंड से ऊपर आना सीख जाए, तब वह उस परमात्मा के हुक्म को बूझने वाला हो जाएगा। Conscious coworker of the divine plan बन जाएगा। वह कहेगा वह (प्रभु) कर रहा है, मैं नहीं कर रहा, देखने वाला बन जाएगा।

मेरा किया कछु न होए॥ जो हर भावे सो होए॥

कबीर साहब फरमाते हैं:

कबीर कूकर राम को मुतिया मेरो नाओं।
गले हमारे जेबड़ी जहं खैंचे तहं जाओं॥

कि मैं राम का कुत्ता हूं। मुझे लोग मुतिया मुतिया कहते हैं। वह देखता है कि किधर जा रहा है। उस के हुक्म का बूझने वाला बन जाता है।

नानक ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन होय॥

कि अगर तुम ऐसा मरना सीख जाओ तो हमेशा के जीवन को पा जाओगे। मौत का फ्रिक कहाँ रहा है ज़िंदा ज़ावेद (अमर) हस्ती बन जाओगे।

Great is man.

मनुष्य जामा (शरीर) सब से बड़ा है। इस में बड़ी भारी मूमकिनात (संभावनाएँ) हैं। हम भूल में जा रहे हैं। जिस्म का रूप बने बैठे हैं। बाहरी ताल्लुकात ही के दायरे में रहे। कभी इस से ऊपर जाना नसीब नहीं हुआ।

अपराविद्या के साधन सारी उम्र करते रहो, आप इंद्रियों के घाट पर रहोगे। आत्म-तत्व दर्शी के पास बैठो, पहले दिन ऊपर ले आएगा।

खैंचें सुरत गुरु बलवान।

यह किसी समर्थ पुरुष की कहानी है भई, ऐरे गैरे नत्थू खैरे का सवाल नहीं। ऐसे पुरुष पहले भी कम थे अब भी कम हैं। राजा जनक को केवल एक हस्ती मिली सारे इंडिया भर में – अष्टावक्र जो अनुभव दे सकी। आज कोई लाखों थोड़ें हैं ? जितने ज्यादा हों, खुशी की बात है मगर उस की निशानी यही है कि लेने वाला कहे कि मुझे कुछ मिला। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। कहते हैं यह मार्ग श्रेय मार्ग है। आंख बंद करो तो अंधेरा है। अंधेरे के पार जाना है। Christ (ईसा मसीह) कहता है बहुत लोग इस रास्ते को तलाश करते हैं मगर:

They could not find it.

यह अंधेरे से रास्ता कहाँ से निकलता है? महापुरुष बिठा कर थोड़ी तवज्जो देते है, ऊपर निकल जाता है। अंतर लाईट आ जाती है।

आप देखेंगे कितना प्रैक्टीकल मज़मून है। कोई चूं चरां की गुंजाइश नहीं। सब महापुरुषों ने यही कहा। तुलसी साहब ने एक और जगह फरमायाः

पुतली में तिल है तिल में भरा राज़े कुल का कुल।

तुम्हारी पुतली में तिल है तिल में कुल का राज़ भरा पड़ा है। अंधेरा है न आगे?

इस परदाये सियाह के ज़रा पार देखना।

Way up (चढ़ाई) कैसे हो सकता है? जो अपने आप कर सकते हैं, कर के देखें। बड़ी खुशी की बात है। अंधे को दो आँखें ही चाहिए न। न कर सको तो जाओ किसी अनुभवी पुरुष के पास। वह तुम को बताएगा कैसे तुम इस अंधेरे के पार जा सकते हो। उस की एक तवज्जो, थोड़ा उभार, ऊपर ले आएगा। एक बैठे, दस बैठे। यह शम्स तबरेज साहब ने फरमाया:

बिबायद बचश्मे सर माशूक दीदन।

चाहिए कि अपनी आंखों से प्रभु को देखो:

कलामश रा बगोशे खुद शुनीदन।

उस के कलाम को अपने कानों से सुनना चाहिए। कैसे?

निहां अंदर निहां बीनश जमालश।

आंख बंद करते हैं तो अंधेरा है न। अंधेरे के पार उसके जमाल को देखने वाले हो जाओगे। वह आंख खुलेगी जिस से उस को देख सकोगे। वह दिव्य चक्षु है, शिव नेत्र है, Third eye है single eye है।

"If thine eye be single thy whole
being shall be full of light."

कहते हैं उस को कौन अनुभव करेगा ?

'अज हिसे निहां फहम कुनद कमालश।

हमारी सुरत जो है, वह उसको अनुभव करेगी। कितनी साफ बात है। हमारे दिल में तो भई सब के लिए इज्ज़त है। जो इस राज़ के वाकिफ हैं, दूसरों को ले जा सकते हैं। ज़बानी जमा खर्च का सवाल नहीं।

दो किस्म के इल्म हैं दुनिया में, एक इल्मे सफीना, दूसरा इल्मे सीना। यह इल्मे सफीना है, बातें यह वह:

खसम न चीन्हें बावरी का करत बड़ाई।

ऐ इन्सान तुझे यह मनुष्य जन्म भागों से मिला है। तेरी बड़ाई इसी में है कि तू प्रभु को पाए, देखने वाला बने। आप कहेंगे क्या हम उस प्रभु को देख सकते हैं? दो किस्म के बयान मिलते हैं महापुरुषों की वाणियों में। एक तो यह है कि:

"चक्र चिह्न न बात, जात और पात नहीं जै।

उस कोई चक्र चिह्न नहीं।

Nobody has seen God so for in life.

किसी ने उस प्रभु को नहीं देखा। ऐसे बयान भी मिलते हैं। मगर ऐसे बयान भी मिलते हैं:

'नानक का पातशाह दिस्से जाहिरा।।

और ईसा मसीह का बयान कि:

Behold the Lord.

कहते हैं फिर, क्या हम देखने वाले बन सकते हैं? जो परमात्मा इज़हार में आई हुई (प्रकट) ताकत है न, into expression, वह ज्योति स्वरूप है।

God is light.

और वह प्रणव की ध्वनि है। उस को हम देख भी सकते हैं और सुन भी सकते हैं। पर किन आंखों से? चमड़े की आँखों से नहीं।

नानक से अक्खड़ियाँ ने अन्न जिन दिसंदो मापरी॥

ऐ नानक वह आँखें और हैं जिन से वह नज़र आता है। यही भगवान कृष्ण ने इशारा दिया किः

"तुम मुझ को चमड़े की आँखों से नहीं देख सकते
बल्कि दिव्य चक्षु से जो मैंने तुम को दिया है।"

गुरु की हैसियत से कह रहे हैं अपने तालिब (शिष्य) को। योगीश्वर गति वाले थे। तो यह चमड़े की आँख नहीं। वह अंतर की आंख कैसे खुलती है? अंधेरे के पार कैसे देखती है? यहाँ थोड़े उभार की ज़रूरत है। जो यह दे सकता है उस का नाम साधु, संत और महात्मा है। केवल ऐसे ही पुरुषों की महिमा वेद, शास्त्र, ग्रंथ, पोथियां गाती रही, गाती है और गाती रहेंगी। हमारे हजूर फरमाया करते थेः

"हिन्दुस्तान में 55 लाख साधु हैं। शायद पांच-सात इस गति के हों।"

ज्यादातर बाहरमुखी elementary stages के मिलेंगे ज्यादातर acting, posing (ढ़ोंगी) मिलेगा। दशम गुरु साहब ने तो बहुत साफ कहा-

"सारे देस को खोज फिरेयो पर कोहू न मिलेयो प्राण पति रे॥"

कि सारे देश को खोजा है, प्रभु को चाहने वाला महात्मा, पाने वाला महात्मा कहीं नहीं मिला। कोई महात्मा आप की will force (विचार धारा) को strong (पुष्ट) कर देगा। कोई जिस्म की पुष्टि के लिए कानून देगा। कोई और ध्यान बना कर ध्यान शक्ति बढ़ाएगा। Elementary stages हैं। कोई और आप को ऋद्धि, सिद्धि सिखा देगा। शोबदाबाज़ी सिखा देगा। अरे भईः

ऋद्धि, सिद्धि और साद।

ऋद्धियों और सिद्धियों का कुछ और ही Taste (स्वाद) है। रूहानियत (आत्म-ज्ञान) कुछ और चीज़ है। संतों की तालीम रूहानियत की है, आत्म विद्या की।

ऋद्धि, सिद्धि नौवें की दासी।

Concentration (एकाग्रता) में यह आ जाती है। अगर हम अपनी तवज्जो इन में लगा लें तो हमारी अगली तरक्की बंद हो जाएगी कि नहीं। इस लिए संतों ने ऋद्धियों सिद्धियों को बरतने का हुक्म नहीं दिया। यह रुकावट हो जाएगी। रुक जाओगे। अपने आप होती है, होने दो। मगर Direct न करो। मैं पश्चिम में गया। वहां healing power का बड़ा जबरदस्त कानून चल रहा है और अच्छे-अच्छे लोग वहां healing (तवज्जो से इलाज) करते हैं। जब मैं जर्मनी में पहुँचा तो वहां healer आया हुआ था। उसकी talk (प्रवचन) सुनी भी। मैं वहाँ पहुँचा तो वह लोग कहने लगे कि आगे जिस्म को heal (ठीक) करने वाला आया था, अब आत्मा को heal करने वाला आ गया। अरे भई आत्मा को बीमारी है न, मन इंद्रियों के घाट की। यही बीमारी सब को लगी हुई है। किसी समाज में हो, सब आत्मा देहधारी हो। सब की आत्मा मन के अधीन है। मन आगे इंद्रियों के अधीन है। इंद्रियों को भोग खींच रहे हैं। यह बीमारी सब को है। इस से liberate इस से आजाद कैसे हो? इस से ऊपर कैसे चले? यह एक practical (अमली) मज़मून है, अनुभव का विषय है जो अनुभवी पुरुष आप को देता है, पहले ही दिन very first day उसकी क, ख यहीं से शुरू होती है। आप देखिए कितना भारी फर्क है। लोग कहते हैं संत क्या तालीम देते हैं? अरे भई यही तालीम देते हैं।

कहां से यह शुरू होती है? कहते हैं अंधेरे से शुरू होती है। श्रेय मार्ग है यह। अंधेरे के पार कैसे जाएँ, यही तो ज़रूरत है। मौलाना रूम साहब से एक बार लोगों ने शिकायत की कि आप जीते जी लोगों को मरने ही का उपदेश देते हो। सब महापुरुष यही उपदेश देते हैं। कहीं मर तो नहीं जाएँगे? कई अभ्यास करने वाले आते हैं कि हम मरने लगे

थे। घबरा गए, हाय मरे। अरे भई मरोगे नहीं। इस मरने में और वैसे मरने में फर्क है बड़ा भारी। जो सचमुच मरना है न, उस में यह है कि अंतर silver cord टूट जाता है कर्मों का। फिर वापस नहीं आता। इस मरने में 1प्रारब्ध कर्मों का टूटता नहीं, इसी लिए मरता नहीं बे-फिक्र रहो। मौलाना रूम साहब को कहा कि यह ऐसी मौत न हो कि कब्रिस्तान ही में पहुँच जाएँ। तो कहने लगे, न भई, वह बात नहीं:

ने चुना मरगे के दर गोरे खी।

कि यह ऐसी मौत नहीं जो तुम को कबर में पहुँचा दे। बल्कि:

'अज जुल्मत सूए नूर रवी।'

यह अंधेरे से तुम्हें प्रकाश में ले जाएगी।

पेश मुरदन मीर ए नेकोसियर।'

कि ए नेक सीरत इन्सान मरने से पहले मरना सीख। मरने से पहले मर।

'ए नेकोसियर जां बजानां खुद गुजर।'

जिस्म के ऊपर है जान, उस के हवाले कर दे। झगड़ा पाक। सारे महापुरुष प्यार से यही कह रहे हैं:

'ता न मोरी सूद के खाही रबूद।'

कि जब तक तू भाई जीते-जी मरना नहीं सीखेगा इस मनुष्य जीवन पाने का तुझे फायदा ही कैसे मिल सकता है? यह काम तुम मनुष्य जीवन ही में कर सकते हो और किसी जीवन में नहीं।

ता न मीरी सूद कै खाही रबूद। रौ बमीर बहरे बर दानद बजूद।।

जा भई मर ताकि इस जिस्म से फायदा उठा ले।

"What does it profit a man if he gains posessions of the whole world and loses one's own soul ?"

क्या हुआ इस जिस्म और इस के सारे सामानों के तुम मालिक बन गए। अगर अपने आप के बारे में कुछ नहीं जाना, तो जन्म बरबाद चला गया। और यह काम हम मनुष्य जीवन ही में कर सकते हैं। गुरु अमरदास जी ने इस को और ज़्यादा ज़ोरदार लफ्जों में बयान किया है:

धृग धृग खाया, धृग धृग सोया। धृग धृग कापड़ अंग चढ़ाया॥

हमारे खाने पर हजार-हजार बार लानत। टांगे पसार कर सोने पर भी हजार-हजार बार लानत। जिस्म ही को बनाते रहे। इस पर भी हजार बार लानत:

'जित हुण खसम न पाया।'

प्रभु को नहीं पाया तो तुम्हारा यह खाना, तुम्हारा यह पहनना हजार बार लानत। कहते हैं क्यों ?

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे। ऐहला जनम गंवाया॥

मनुष्य जीवन की पौड़ी बड़े भाग्य से मिली है। इसमें अगर आप हिसों से ऊपर आना सीख जाओ, किसी महापुरुष की कृपा से way up हो जाए, higher (ऊँचे) रस को पा जाओ, आना जाना खत्म हो जाए। अगर इंद्रियों के घाट ही पर रहे, चाहे आलिम (विद्वान) रहे या फाजिल रहे, कहाँ जाओगे ? बार-बार दुनिया में आओगे।

तो यह है संतों की तालीम ऐसे अनुभवी पुरुष जो मिल जाएँ। अगर मनुष्य जीवन पा कर इस तरफ तवज्जो नहीं दी तो क्या होगा, आगे तुलसी साहब फरमाएँगे :

दिना चार का खेल है झूठा जगत पसार।
जिन विचार पति न लखा बूडे भव जलधार॥

कहते हैं यह चार दिनों का खेल है। यह जगत हमेशा रहने की जगह नहीं। न कोई रहा न रह सकता है। यह फना का मुकाम है। गुरु नानक साहब ने इस का बड़ा अच्छा फोटो खींचा है आसा की बार में। वह कहते हैं:

कूड़ राजा कूड़ परजा। खप होए खार॥

कूड़ की बड़ी महिमा गाते-गाते आखिर फरमाते हैं:

कूड़ कूड़े नेह लग्गा, विसरेया करतार॥

जिस्म का रूप बने हुए, जिस्म का रूप बने हुओं से मुहब्बत लगाई। जहां वह जाएँगे वहां यह भी जाएगा।

कूड़ कूड़े नेह लग्गा, विसरेया करतार।
किस नाल कीजे दोस्ती, सब जग चल्लण हार॥

फिर बार-बार यहीं आना पड़ेगा। तो कहते हैं दुनिया बेचारी इस भूल में जा रही है। यह फना (नाशवान) का मुकाम है। यह हमेशा रहने का मुकाम नहीं।

'झूठा जगत पसार।'

जिन्होंने यह जान कर:

'जित्रो चल्लण जाणेया सो क्यों करे विथाह।'

वह इतने झूठ के पसारे क्यों करेगा? क्यों किसी का हक मारेगा? क्यों किसी का खून निचोड़ेगा? क्यों किसी का दिल दुखाएगा? इतने पसारे क्यों करेगा? हमें जाना भूल गया। मरना सच और जीना झूठ। आज मरो, दस साल में मरो, सौ साल में मरो। आखिर जाना है न। अगर अब ही मरना सीख जाएं। अब तो यकीन नहीं आता न। अगर रोज पिंड को छोड़े तो दुनिया को देखने वाली आंख बदल जाएगी कि नहीं? जिन्होंने कहते हैं ऐसा नहीं विचारा – जो विचारेगा उस को फिक्र भी होगा मैंने जाना है। मैं कौन हूं? कहां जाना है? कहते हैं ऐसा विचार कि जिन्होंने पति को नहीं लखा, उस परमात्मा की तरफ तवज्जो नहीं की, जन्म बरबाद कर गए। तरीका बयान अपना है, बात वही है।

यह तालीम किन लोगों के लिए है ? As a man problem है, सबके लिए है। हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, यहूदी हो, कोई और हो। यह मज़हब हम ने बनाए। रहो किसी समाज में ठीक है। नहीं तो corruption हो जाएगी। हर एक समाज की गर्ज क्या है, कि आत्मिक उन्नति हो। मनुष्य जीवन भाग्य से मिला है। जन्मों जन्मों से यह प्रभु से बिछुड़ा पड़ा है। यह फिर उस से मिल जाए। यहां की चीजें यहीं रह जाएँगी। अगर चलना याद रह जाए हमारा रहना सहना बदल जाए। अगर रात हमें नोटस मिल जाए रात को जाना है भई, गाड़ी तैयार हो जाएगी, कोई नौ बजे की गाड़ी फिर क्या करोगे? सब झगड़े मिट जाएंगे की नहीं?

तो हमें चलना भूल गया, जाना भूल गया। बात तो यह है। तुलसी साहब ने यही फरमाया:

दिना चार का खेल है झूठा जगत पसार।
जिन विचार पति न लखा, बूड़े भौजल धार।।

वह संसार सागर में डूब गए।

एक भरोसा, एक बल, एक आस विश्वास।
स्वांति सलल गुरु चरण है चात्रिक तुलसीदास।।

अब यह चीज़ संतों की कृपा से मिलती है। जिनकी रूह, आत्मा, आसमानों पर उड़ती है, सफर करती है। कहते हैं हमारी तो उन्हीं पर आस है, सब आशाओं में। विश्वास भी उन्हीं पर। हमारा उसी का बल है। उसी के सहारे हैं। वह समर्थ पुरुष है। बच्चे को उठाना हो तो पिता हाथ देता है न। कहते हैं कि हम तो उन्हीं के आधार पर हैं। हमें उन पर विश्वास है। कहते हैं कि हम तो गुरु के चरणों के ऐसे ही आशिक हैं, जैसे चात्रिक स्वांति बूंद का। हर घड़ी वह स्वांति बूंद की ही इंतज़ार करता है। जैसे वह सिवाय स्वांति बूंद के किसी और पानी को कबूल नहीं करता। ऐसे ही कहते हैं हम अपने गुरु के सिवाय और किसी को कबूल नहीं करते। उन से क्या मिलता है? इतनी ऊँची साइंस ! जन्म मरण का खात्मा। सो इस लिए कहते हैं हम अपने गुरु के चरणों के दास हैं। कबीर साहब ने एक जगह फरमाया चात्रिक का सिलसिला बयान करते हुए, कि एक चात्रिक था, पपीहा था। एक दरख्त पर बैठा था। पीहू-पीहू कर रहा था स्वांति बूंद की इंतजार में था। उस का गला खूश्क हो गया। बेहोश होकर गिरा, कहाँ? पानी में ! पानी में गिरने के बाद कबीर साहब कहते हैं:

धीरज रहा न रंच।

देख कर के पानी को फिर भी कबूल नहीं किया। सिवाय स्वांति बूंद के। अरे भई, अगर तुमको ऐसा महापुरुष मिल जाए। तो ऐसा विश्वास बनाओ। गीता के चौथे अध्याय में भगवान कृष्ण ने फरमाया है कि-

"अगर तुम ज्ञान पाने की अभिलाषा रखते हो तो जाओ किसी ऐसे महात्मा के पास जो अंतर में परमात्मा के दर्शन करते हैं।"

(क्या करो) नेक नियत से सवाल करके हर एक सवाल का उनसे जवाब लो, वितंडाबाद के लिए नहीं, कपट रखके नहीं, समझने के लिए

जब हर एक जवाब मिलें, तुम्हारी तसल्ली हो फिर विश्वास बनें। विश्वास बने फिर जो वह कहे करो। तुम कामयाब (सफल) हो जाओगे। तुम भी ज्ञान का अनुभव करने लग जाओगे।

अब आप देखते हैं अनुभवी पुरुष और आलिमों फाजिलों (विद्वानों) और आम साधुओं संतों में क्या फर्क है। तो कहते हैं हमें उसी की आस है। उसी के बल पर जी रहे हैं। आप को पता है बुल्लेशाह थे। शाह इनायत के मुरीद (शिष्य) थे। पहले लोकलाज होती है न। तो यह (महापुरुष) चाहते हैं कि लोकलाज उड़ जाए। कहने लगे (अपने शिष्यों से) जाओ भई, कहो बुल्लेशाह हमारा गुरु भाई है। नाचते टापते वहां जाओ। बुल्लेशाह सैयद थे न। वह गए। लोगों ने बुल्लेशाह से कहा कि तुम्हारे गुरु भाई आए हैं। अच्छे गुरु भाई हैं नाचते टापते आए हैं। कहने लगे (बल्लेशाह), वे मेरे गुरु भाई नहीं हैं। लोक लाज में आ गए। वे वापस आ गए। शाह इनायत से जाकर बोले, बुल्लेशाह ने यह कहा है। फरमाया, कोई बात नहीं, आज पानी नहीं देंगे उस क्यारी में। शिष्य को मिलता है जो, गुरु की तवज्जो ही से मिलता है न। हजारों मीलों पर पानी देता है वह । अंतर का सिलसिला टूट गया जो बना था। अब रोने लगे। बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा। अब जा नहीं सकते। वह (साई इनायत शाह) जो थे वह गाना सुनने का शौक रखते थे। वहां कवाली हुवा करती थी हफ्ते में एक बार। उसने (बुल्लेशाह ने) कहा चलो, गाना ही सीख लो। वैश्या के पास रहे कितनी मुद्दत। गाना सीख लिया। जब वह जाने लगी वहाँ एक बार बोले, आज अपने कपड़े तू मुझे दे दे। बोली, बहुत अच्छा। कपड़े पहन लिए वे। अब दिल की लगी हुई से जो बात निकलेगी वह तो जली हुई आएगी न। वहां पर फिर काफियाँ उच्चारण कीं। ज्यों-ज्यों सुना त्यों-त्यों– शाह इनायत तो जान गए यह वही है। उठ खड़े हुए। उस को गल लगा लिया। कम फहम (नासमझ) जो शिष्य थे वह कहने लगे देखा न महाराज आखिर कलई खुल गई। यही होते हैं महात्मा आज कल। तो कहने लगे (साई इनायत शाह) बुल्लेया! लाह (उतार दे) पर्दा ताकि दुनिया का धोखा जाता रहे।'' वह बोले, ''मैं बुल्ला नहीं मैं भुल्ला हूँ।''

मैं भूल गया।

तो देखा किसी के बल पर है वह। वरना सिख की क्या हैसियत है माफ करना। उस हकीकत की तरफ जाना, पिंड के ऊपर आना, आगे के नज़ारे खुलने – वह (गुरु) बरतन भी बनाता है और ढालता भी है। यह उस का काम है। जो विश्वास, आस, बल और भरोसा उस का (गुरु का) हो, उस का बेड़ा पार है।

"Faith is the root cause of all religions."

भरोसा परमार्थ की ज़मीन है। तो कहते हैं तुलसी साहब कि हमें गुरु के चरणों का ऐसे ही प्यार है जैसे चात्रिक का स्वांति बूंद के लिए। और इस मज़मून को वाजेह (इस का स्पष्टीकरण) करेंगे कि कैसी लगन होनी चाहिए शिष्य की जो हकीकत को पाना चाहता है। उस के दिल में कुदरती बात है कि प्यार बनता है। वह हकीकत से जोड़ता है। उस का नशा आता है। नशे का प्याला, वह पिलाने वाला है। और कहीं से मिल नहीं सकता। तो कहते हैं हमारा तो सब भरोसा अपने गुरु पर है। उस के चरणों के हम चात्रिक हैं, स्वांति बूंद के, जो अमृत का वह हमें घूंट देता है।

तुलसी ऐसी प्रीत कर जैसे चन्द्र चकोर।
चोंच झुकी, गरदन मुड़ी, चितवत वाही ओर॥

अब तुलसी साहब फरमाते हैं कि ऐ शिष्य तू प्यार कर गुरु से। कैसे ? जैसे चकोर का चांद के साथ होता है। चकोर का क्या कायदा है ? चाँद चढ़ता है, देखता है। चाँद जा रहा है सिर ऊपर। पीछे जाता है वह, सिर उल्ट के नहीं देखता। इसी तरह उस की चोंच ज़मीन के साथ लग जाती है। हर दम उसी का प्यार, उसी का भरोसा, उसी का ख्याल, उसी का ध्यान – ऐसा प्यार हो। प्रीत से ही वह प्रभु मिलता है। परमात्मा प्रेम है। आत्मा उस की अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है और परमात्मा के मिलने का ज़रिया (रास्ता) भी प्रेम है। जितना हम ग्रंथों पोथियों का स्वाध्याय करते हैं, उस से रुचि बनती है, शौक बनता है। जितनी पूजा पाठ, यह वह हम करते हैं, भाव भक्ति के लिए यह सब रखे गए हैं। तो इन के करने की गर्ज यह है कि हमारे अंतर उस प्रभु के लिए भाव-

भक्ति बने। अगर यह नहीं बनी:

सद साल इबादत कुनद नमाजी नेस्त।
कसे को इश्क नदारद खुदा राजी नेस्त॥

सौ साल इबादतें (पूजा पाठ) करते रहो तुम सच्चे मायनों में ईश्वर के पुजारी नहीं बन सकोगे अगर यह सब कुछ करते हुए तुम्हारे दिल में तड़प, विरह और खोज उसकी याद में तुम्हारी आँख से दो आँसू नहीं गिरें तो यह सब जमनास्टकें हैं। सारी उम्र करते रहो, तुम परमात्मा के राज़ को नहीं पा सकोगे। आंसू तो बहुतेरे आते हैं हमें। दुनिया के लिए सिर पटकते हैं। हाय हाय करते हैं। हाय मर गया, यह हो गया, नुकसान हो गया। आँसू भी तभी आँसू हैं जो उस तरफ के लिए हों। बताओ कितने लोगों के प्रभु की याद में आँसु बहते हैं? गुरु की याद में आँसु बहते हैं? दिल की कदूरतों (विकारों) को पानी वह धो देता है। मौलाना रूम साहब ने फरमाया एक जगह कि अगर तुम मक्के जाना चाहते हो खुदा के घर तो तरी के रास्ते जाओ। समझे। यह तरी का रास्ता है। मक्के जाओ अगर तुम, बिलोचिस्तान फारस वगैरह के रास्ते जाओ, रेगिस्तान में जा पड़ोगे। समुद्र के रास्ते जाओ तो जल्दी पहुँच जाओगे। तो इसी तरह प्रभु के देश जाना है तो रो-रो के जाओ।

जिन पाया तिन रोय।
हँसी खुशी जे पिया मिले तां कौन दुहाएगा होय॥

वह हकीकत तुम में है। बाहर से हटोगे नहीं वह मिलेगी नहीं, यह पहला कदम है। इस का नाम परमार्थ है, परम अर्थ। ऐसा धर्म जो कभी नाश न हो। उपनिषद कहते हैं:

"वह कौन सी चीज है जिसको पा कर फिर
किसी और चीज के पाने की जरूरत नहीं रहती ?
वह कौन सी चीज है जिस को जान कर फिर,
किसी और चीज के जानने की जरूरत नहीं रहती।"
'नाम मिलिये मन तृप्तिए।'

तृप्त हो जाता है उस को पा कर desire for no more. यह कब बनती है दौलत? यह अमृत का घूंट कहां से मिलता है? गुरु से। गुरु

नानक साहब ने फरमायाः

जिस जल निधि कारण तुम जग आए
सो अमृत गुरु पाही जीयो॥

जिस निधि (हर एक किस्म की खुशी) के देने वाले जल की खातिर तुम दुनिया में आए हो, वह अमर कर देने वाला, अमर जीवन देने वाला जल कहां से मिलता है? 'सो गुरु पाही जियो' वह गुरु से मिलता है।

छोड़ो बेस, भेस चतुराई दुविधा। एह फल नाहिं जियो॥

चतुराई और दुविधा को छोड़ो। यह दुविधा का कारण है। वेशों और भेशों में न रहो।

"To be born in a temple is a blessing but to die in it is sin."

किसी समाज में पैदा होना, यह बरकत है मगर इतने ऊँचे चढ़ो कि सारी समाजें अपनी बन जायें।

'मानस की जात सबै एकै पहचानबो।'

सब महापुरुष जो यहाँ पहुँचे, इस अनुभव को पाया, वह कहते हैं:

'हजारों में बैठ कर उस प्रभु के गुणानुवाद को गाओ।''

यह ऋगवेद कह रहा है। उस की पूजा करो। यह नही कहा, हिंदू करे, मुसलमान करे। अरे भई सब करो। हम सब उसी के पुजारी हैं।

सैकड़ों आशिक हैं दिलाराम सब का एक है।
मजहबों मिल्लत जुदा है काम सब का एक है॥

यह नजरिया (दृष्टिकोण) है अनुभवी पुरुषों का:

'सत्गुरु ऐसा जाणिए जो सब से लए मिलाए जियो।

जो सब को मिला कर बैठता है। वहाँ कौमों मज़हबों का सवाल नहीं। वह यह नही कहता, यहाँ न जाओ, वहाँ न जाओ, कहाँ न जाओ। वह कहता है जाओ सब जगह। हमारे हजूर थे, फरमाया करते थे:

'भई यह चीज थी। तुम को दे दी। जाओ इस से बेहतर चीज मिले,
तुम भी लो, मुझे भी कहना, मैं भी लूँ।''

वह अनुभवी पुरुषों का नज़रिया (दृष्टिकोण) है भई। जैसे चात्रिक हमेशा स्वांति बूंद की ख्वाहिश (इच्छा) रखता है। किसी और पानी को

कबूल नहीं करता, इसी तरह हम उसकी, स्वांति बूंद की, इंतज़ार में हैं, और गुरुमुखता भी इसी में है। जिन के दिल दिमाग में भी किसी और का ख्याल न आए सिवाय अपने गुरु के। हाँ, एक माली गया, हजूर फरमाया करते थे, दूसार माली आ गया। वहा पानी देगा। उस से फायदा उठाओ। वह साफ कहेगा, मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ। मैं तुम्हारा गुरुभाई हूँ भई। वह चाहेगा कि मेरे भाई सब ही पास हो जाएँ। दर्द रखता है वह। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि उस से (गुरु से) ऐसा प्यार करो जैसे चाँद और चकोर का है। जहाँ प्रेम है वहाँ यकसुई (एकाग्रता) है। समझे। हजारों में बैठा हुआ एक आदमी एकांती हो जाता है। उसे और कुछ सूझता ही नहीं। वह सच्चा बैरागी है। घरबार छोड़ना बैराग नहीं, एक जगह higher purpose (परमार्थ) में लग गया, बाकी चीजें नफी हो गई। यही सच्चा बैराग है। जिस्म जिस्मानियत का भी ख्याल नहीं रहता। अपने आपे का भी ख्याल नहीं रहता। वह रह गया या यह रह गया। बस। वह भी दो से एक रूप हो कर चलते हैं।

प्रेम गली अति सांकरी ता में दो ना समाहिं।

गुरु और शिष्य को भी एक हो कर रहना पड़ता है। यह है आदर्श भई। प्रेम किस को कहते हैं? कभी हंस दिया, कभी रो दिया, कभी विश्वास बना, कभी टूट गया, इस का नाम प्रेम नहीं।

'आठ पहर भीना रहे प्रेम कहावे सोय।'

चौबीस घंटे एकसार। उस में change (परिवर्तन) न आए। इस का नाम प्रेम है। सब महापुरुषों ने इसी बात की तालीम दी है।

"Love and all things shall be added unto you."

आपस में प्रेम करो। परमात्मा सब में है इस लिए सब से प्रेम करो। सारी बरकतें तुम को मिलेगी। फिर कहने लगे – You love one another. तुम आपस में प्रेम करो ताकि लोग जाने तुम मेरे शिष्य हो। बच्चे आपस में प्यार से रहे तो पिता को खुशी होती है कि नहीं।

तो यह है आदर्श जो अनुभवी पुरुषों ने हमारे सामने रखा है। बुद्धि के लिहाज से इन चीजों के जानने से शांति नहीं होगी। शौक बनेगा।

जितना यह चीजें तुम्हारे जीवन का हिस्सा बनेंगी उतनी शांति हो जाएगी। जो खुराक हजम हो वह ताकत देती है। जो खुराक हजम न हो, हैजा जो जाता है, कई बीमारियाँ बन जाती है। जो महापुरुषों के वचन:

जो वचन गुरु पूरे कहेयो सो मैं छीक गाठड़ी बांधा।।

गांठ में बांध लो। Live upto करो। याद रखो कि परमात्मा की दरगाह में इस बात पर फैसला नहीं कि तुम कौन हो? तुम्हारे जिस्मों पर किस समाज की मोहर है बल्कि वह देखते हैं What you are ? तुम क्या बने ? Zoroaster (जोरास्टर) ने कहा है-

''तुम सब भाई परमात्मा की फौज में दाखिल हो जाओ। Join the Army of God.

उन से पूछा कि कौन से गुण होने चाहिए जिस से हम परमात्मा की फौज में दाखिल हो सकते हैं ? तो फरमाया righteousness पवित्रता जीवन का। कहते हैं वह क्या होती है ? तो उस की तारीफ (व्याख्या) की-

"Kind thoughts, kind words and kind deeds."

शुभ भावना हो सब के लिए, मीठी जबान हो, कुरस्तगी (कठोरता) नहीं।

जे तो पिया मिलण दी सिक्क। तां हिया न ठाई किनी दा।।

कबीर साहब फरमाते हैं-

''कटुक वचन मत बोल।''

और kind deeds, काम वह करो जिस से सब को सुख हो। यह qualification (गुण) पैदा कर लो, तुम परमात्मा की फौज में दाखिल हो जाओगे। कितना बने हो यह सवाल रहा । बाबा जयमल सिंह जी महाराज थे। ब्यास के किनारे थे। झोपड़ी डाली हुई थी। मरी के पहाड़ों में गए। वहाँ हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) थे। आप फरमाया करते थे कि पास से गुजरे। एक और आदमी उन के साथ था। तो कहते हैं कि हम ने उन को 'फतेह' भी न बुलाई। होगा कोई, कमिश्नर से मिलने आया होगा कोई पेंशनर। तो कहने लगे (बाबा जयमल सिंह जी) अपने साथी से कि हम इस के लिए आए हैं।

यह in the make होते हैं याद रखो। हाथ लगाने से कोई महात्मा नहीं बन जाता। यह commission (परवाना) प्रभु की तरफ से है। क्या सारे पंजाब में कोई आदमी नहीं रहा था? बड़े थे, मगर वह आदमी नहीं था जिस की वह (बाबा जयमल सिंह जी) तलाश में थे। तो इंसान का बनना मुश्किल है भई, परमात्मा का पाना मुश्किल नहीं। इकबाल शायर (कवि) ने कहा कि हज़रत मूसा कोहेतूर पर मिलने गए खुदा से। क्या उन को मालूम नहीं था कि:

'खुदा हम दर तलाशे आदमी अस्त।'

खुदा तो आप तलाश कर रहा है मुझे कोई आदमी मिले? तो righteousness (नेक पाक जीवन) पर फैसला है lables (समाजों के ठप्पों पर) फैसला नहीं है।

"जात पात पूछे न को, हर को भजे सो हर का हो।।"
उत्तम और चांडाल घर जहां दीपक उजियार।
तुसली मते पतंग के सभी जोत इकसार।।

कहते हैं, 'उत्तम और चांडाल पर, किसी भी घर। अब ऐसे महात्मा को ढूंढे कहा? सवाल यह आ जाता है, आप ने महिमा तो बड़ी गाई पर ऐसे महात्मा को तलाश कहां करें? कहने लगे इस बात की परवाह न करो कि वह ऊँची जात है या नीची जात का। जातें हम ने बनाईं। जैसे कोई प्रारब्ध कर्मों के अनुसार अंतर रुचि बनी या जैसे आगे environments (वातावरण) बना, वैसी समाज बन गई। कहते हैं कि यह न ढूंढो कि ऊँची जात वाले के घर ही में होना चाहिए ऐसा महात्मा, नीची जात वाले के यहां नहीं। यह हमारी नजर में ऊंच-नीच है। उन की नजर में तो सब आत्मा देहधारी हैं।

'मानस की जात सबै एकै पहचानबो।'

कहते हैं ऊंचे के घर, ब्राह्मण के घर समझो या शूद्र के घर, अगर दीवा जग जाए, जहाँ दीवा जगेगा वहां परवाने जाएंगे। इस बात का ख्याल न करो कि जरूर वह उत्तम के घर ही पैदा हो। वह हर एक जगह है। कहां ज्योति का विकास है, यह देखो। कहां ऐसा महापुरुष है जो तुम्हारे

अंतर ज्योति का विकास कर सकता है। कहां ऐसा महापुरुष मिलता है जो – इस वक्त तुम जिस्म का रूप बने बैठे हो उस से way up कर सकता है, उस से तुम्हें ऊपर ला सकता है। जाओ वहाँ। जो इस बात के खाहिशमंद (इच्छुक) होंगे, वह तलाश करते-करते जा पहुंचेंगे। मीराबाई कहाँ पहुँची ? रविदास जी के यहां। कौन थे ? चमार थे। चमार और इंसान में कोई फर्क नहीं। वह भी इंसान है। जैसा काम किसी ने किया वैसा कहलाया। बघेल सिंह वगैरह राजे कहाँ गए? कबीर साहब के यहाँ। जुलाहे थे। फिर। नामदेव छींबे थे, छापने वाले थे, कपड़ों पर ठप्पा लगाने वाले। तो खड़ाव किस की रह गई थी, वहां जाके पाई। मतलब यह है कि दीवा जगेगा परवाने वहां जायेंगे। जो प्रभु के आशिक हैं अरे भई यह सब कुछ कर कर के हार जाते हैं। आखिर उस हकीकत को पाना चाहते हैं। वहां जाना होगा जहाँ ऐसी हकीकत मिल सकती है। सो तुलसी साहब फरमा रहे हैं, भई इस भूल में न रहना। जरूरी नहीं ब्राह्मण ही हो। मैं एक ब्राह्मणों के गांव में गया। यही बात पेश की कि आप ब्रह्म हो। ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म को बांधे। पैदायशी लिहाज से तो कोई चीज नहीं मिलती न। पिता डाक्टर है लड़का डाक्टर नहीं। तो फिर। डाक्टर के पास जाना होगा।

तो कहते हैं, यह न नजर करो कि जरूर हिंदुओं के घर में होगा या मुसलमानों के घर में पैदा होगा या ईसाइयों के घर में ही पैदा हो सकता है ऐसा महात्मा और कहीं नहीं। इस भूल में न रहना। वह कहीं भी हो सकते हैं। बड़ी frank talk (स्पष्ट बात) दे रहे हैं। जहां दीवा जलेगा वहां परवाने जाएँगे। अनुभवी पुरुष भी, जहाँ ऐसे पुरुषों की खाहिश है, वह चाहे चमार हो, उन के घर भी चले जाते हैं। पतंगे को क्या है ? ज्योति ही चाहिए। कहां जगती है, इस बात का सवाल नहीं। उस के अंतर ज्योति का विकास है। तुम्हारे अंतर ज्योति का विकास कर सकता है।

परदा दूर करे आँखन का, निज दर्शन दिखलावे॥

जिस को यह competency (समर्था) है, उस के पास जाओ। अंतर में दो मार्ग हैं। गीता में भी इस का जिक्र आया है। पितृयान मार्ग और

ज्योति मार्ग। पितृयान मार्ग में नेक बद कर्म (पाप-पुण्य) हैं। इस लिए फिर आना जाना होता है। ज्योति मार्ग में रूह जाती है वह फिर वापस नहीं आती। फिर इस ज्योति मार्ग का जिक्र करते हुए आगे पाँच ज्योतियों का भी जिक्र किया है। उन से गुजरना पड़ता है। इशारे तो देते हैं। अब अनुभवी पुरुष न मिलें तो क्या हो ? Sealed books (मोहर लगी) आती है महापुरुषों के ग्रंथों, पोथियों की sealed (बंद) ही चली जाती है। कोई अनुभवी पुरुष मिले, वह खोलकर बताए यह बात तुम में है, अंतर practical experience (व्यक्तिगत अनुभव) दे, तब तो काम बने न। सारी उम्र एक चिंगारी भी ज्योति की अंतर नहीं पाया तो मर कर कोई पंडित थोड़ा बन जाएगा। हमारे हजूर फरमाया करते थे जो जीते जी पंडित है वह मर कर भी पंडित है। जीवनमुक्त सबने माना है सनातनी भाईयों में रिवाज है कि अंत समय कहते हैं जल्दी करो, दीवा मंसाओ। अगर जीते जी दीवा न मंसा जाए तो बेगता मर जाता है। कितनी जरूरत बताई ? वेद भगवान कहता है:

"जो अविद्या में है वह मर कर अंधकारलोको में जाते हैं। जो विद्या में रत हैं, बहुत ज्यादा बुद्धि के फैलाव में है, वह उन से भी ज्यादा अंधकार लोकों में जाते हैं।"

कबीर साहब फरमाते हैं:

"सुन्न महल में दियना बारि लै।"

सुन्न महल है यह (सिर की तरफ इशारा कर के) इस में दीवा जगा ले। यह है दीवा का मतलब। महापुरुषों की तो यही तालीम रही। यह राज़ (भेद) आगे बड़े गुप्त होते थे। अब तो खुले मैदानों में बयान किए जाते हैं। जितना घोर कलयुग होता जा रहा है उतना ही यह दया भी खोल खोल के दुनिया के सामने रखी जा रही है क्योंकि आखिर इस से कल्याण है। इस के बगैर गति नहीं।

तुलसी कवंलन जल वसे रवि-शशि वसे आकाश।
जो जाही के मन बसे सो ताही के पास॥

अब सवाल यह आता है कि ऐसा महात्मा नजदीक हो या दूर, क्योंकि

है कमयाब (कहीं-कहीं) राजा जनक को एक अष्टावक्र मिले सारे इंडिया भर में। कहते हैं नजदीकी दूरी का सवाल नहीं। तलाश करो। सारी उम्र तलाश करते रहो, जब कोई महापुरुष ऐसा मिले जो तुम को way up कर दे। You see for yourself what is what (आप अपनी आंखों से देखने वाले हो जाओ) फिर उसकी तवज्जो, कहते हैं जैसे कमल फूल पानी से ऊपर रहता है, उस का अक्स (प्रतिबिंब) पानी में पड़ता है। जैसे आसमान पर चाँद और सूरज हैं उन का अक्स पानी में पड़ता है- है हजारों मील दूर, ऐसे ही:

'जो जाही के मन बसे सो ताही के पास।'

तुम्हारी याद होगी, वह तुम्हारे हृदय में बसेगा। कबीर साहब ने इस लिए फरमाया:

"गुरु सात समुद्रों के पार रहता हो।'

शिष्य इस तरफ रहता हो:

"दीनों सुरत पठाय।"

सुरत को direct करो। रेडियो अगर हजारों मीलों से आवाज को पकड़ता है, तुम्हारी आत्मा क्यों नहीं उस महान आत्मा की आवाज को पकड़ेगी ? सिर्फ यह है कि हमारे और उस के दरम्यान दुनिया आ कर बैठी है।

'ऊपर से नमाज पढ़ते हैं दिल में बुतों की याद।"

दिल में बुत बस रहे हैं। झगड़े बस रहे हैं। मैं मैं, तू तू, बस रही है। दुनिया की मुहब्बत, इंद्रियों के भोगों रसों की लालसा बस रही है। अरे भई वह तो दूर नहीं यह ही – रेडियो में जरा सी मिट्टी वगैरह आ जाए तो आवाज नहीं पकड़ता। तो भई सफाई हृदय की चाहिए। तो कहते हैं, कहीं भी हो। जैसे जल में कमल का अक्स पड़ता है, आसमान पर चाँद सूरज का पानी पर अक्स पड़ता है। ऐसे ही अगर तुम्हारे दिल में उस की याद होगी तो दिल दिल को राह बनेगा मदद मिलेगी। स्वामी विवेकानंद थे। वह world religions conference (विश्व धर्म कानफ्रेंस) शिकागो (अमेरिका) में attend (अटैंड) कर रहे थे। याद रखो अपने

घर में बैठ कर तो आदमी बातें बना सकता है, जहाँ दुनिया के चीदा (चुने हुए) आदमी जमा हों वहाँ बात करना कोई मायने रखता है। थोड़ी देर talk (टाक) दी। कुछ nonplus हो गए (खो से गए) आगे क्या कहें ? तो पानी माँगा, बोलने वाले को पानी माँगने की इजाजत है। उतनी देर खामोश रह सकता है। तो पानी माँगा। आँख बंद की। क्या किया ? अपने गुरु का ध्यान किया। कलकत्ते में थे वह। Receptive हुए। रो चली। पानी आया भी नहीं। चल पड़े। पाँच, छः, सात घंटे talk देते गए। लोगों को भय हो गया कि अगर यह रह गया तो सब मज़हबों (मतों) का नाश हो जाएगा। गुरु का बल कितना जबरदस्त है। अगर हमारा मुँह ही उधर न हो तो फिर ? तो तुलसी साहब बड़ा खोल-खोल कर समझा रहे हैं।

वैसे भी – As you think so you become जिस का ध्यान करोगे उसी का रूप बनोगे न। अगर उस की रूह असमानों का सफर करती है तो बेअख्तियार तुम को उभार मिलेगा। तुम्हारी रूह आस्मानों पर, बगैर जद्दोजहद के, कोशिश के, चलने लग जाएगी। कई भाई यह कोशिश करते हैं कि हम अपनी मेहनत से जाएँ। जहाँ अपने efforts (प्रयत्न) का खयाल होगा, वही रुकावट बन जाएगी याद रखो। मिसाल फरमाते हैं मौलाना रूम साहब कि कबूतर उड़ा जा रहा था तो एक चूहा था जमीन पर। तो पूछा, 'आप कहां जा रहे हो?'' तो कहा 'खुदा के घर जा रहे हैं मक्का शरीफ।' तो कहने लगा (चूहा) कि मेरी भी खाहिश है मुझे भी पहुँचा दो मक्का शरीफ।' उस कबूतर को रहम (दया) आया। उस को अपने पंजे में पकड़ लिया और जा कर काबे में फेंक दिया। तो शिष्य की हालत तो यही है भई। अगर हम receptive हों वह हम को accept (कबूल) कर ले, हमारे दिल दिल को राह बन जाए, वह पहुँचा देगा। तो कहते हैं हम को तो उसी का बल और भरोसा है भई सच्ची बात है और सारे ही – हमारे हजूर थे। जब भी कोई बात होनी कहते बाबा जी कर गए हैं। और और महात्माओं का भी यह ख्याल है। राय शालिगराम जी थे। 'स्वामी जी कर गए हैं।' महर्षि जी थे 'स्वामी जी करते हैं।' अरे भई

वह conscious coworker हैं। वह देखते हैं वही करने वाला है। मैं समझा करता था कि इस में थोड़ी बहुत कसर नफसी (विनीत भाव) हो। शायद वह नम्रता के कारण यह बातें कहते हों पर अब मैं देखता हूँ वाकई ठीक है। वही करता है।

शिष्य और गुरु का बड़ा नाजुक रिश्ता है। जहाँ तुम्हारे और उस के दरम्यान खाह (चाहे) जिस्म आए, बाल बच्चे आए या तुम्हारा बल आ जाए, तो रुकावट है।

सेव न मिलेयो, चाल न मिलेयो मिलेयो आए अचिंता।।

वह कैसे मिलता है ? सेवने से भी नहीं यह कहो कि मैं सेवने वाला हूँ इस लिए मुझे मिलेगा। चालना भी- दिन रात कोशिश करते रहो चौबीस घंटे clutching रहे, तो भी नहीं मिलेगा। वह very clutching रास्ते में रुकावट बन के खड़ी हो जाएगी। स्वामी राम तीर्थ ने एक मिसाल दी है कि तुम दरवाजे पर खड़े हो। किसी को कहते हो कि अंतर आ जाओ। तुम दरवाजा छोड़ते नहीं, वह आए कहाँ से ? Pray and wait, हट जाओ। दरवाजा छोड़ दो, उस को आने दो।

'मिलेया आय अचिंता।

अचिंत हालत पर हो कर दरवाजे पर बैठ जाओ। वह मिलेगा। जो दरवाजे पर है उसको मिलेगा। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि एक अमीर आदमी के दरवाजे पर तुम बैठे हो। वह देखता है कि कोई मेरे दरवाजे पर बैठा है। अरे भई तुम उस प्रभु के दरवाजे पर back of the eyes बैठो, उस को पता नहीं कि मेरा बच्चा मुझे मांग रहा है ? मिलेगा। बैठ जाओ और छोड़ दो मैं-मैं, तू-तू, clutching, यह मिले। वह मिले यह बख्शिश का दरवाजा है भई। समझे। मुसलमानों में एक रिवायत आती है। शायद कुरान शरीफ में है, मेरा ख्याल है। एक फकीर था। वह बचपन से ही जंगल में रहा। वहाँ इबादत (पूजा) करता था। वहां पानी नहीं था। एक चश्मा पानी का था, वहाँ से रोज पानी पी लिया करता था और एक अनार का दरख्त भी वहां था। उस में रोज एक अनार पड़ता था। वह खा लिया करता था। सारी उम्र गुजारी। आखिर कहते हैं, अंत

समय आया। मर गया। खुदा की हजूरी में पहुँचा तो वह कहने लगे- 'अच्छा भई तुम को हम ने अपने फजल और करम से (दया-मेहर से) बख्शा।' दिल में ख्याल आया कि सारी उम्र तो इबादत करते-करते मर गए, अभी भी खुदा साहब की बात ऊपर ही रही। बख्शा तो फजल और करम से ही बख्शा। जब यह ख्याल आया तो कायदे की बात जब इंसान जानता है कि कुछ किया है मैंने – तो खुदा ने कहा तेरा हिसाब कर दें? कहने लगा जैसे आप की मर्जी। कहने लगे, देखो तुम्हें पता है उस जंगल में कहीं पानी नहीं था। तुम्हारे लिए एक चश्मा ताजा पानी का पैदा किया। वहाँ खाने को नहीं था। एक दरख्त अनार का पैदा किया, उस में रोज एक अनार पड़ता था। किसी दरख्त में रोज एक अनार पड़ता है? यह तुम्हारी सारी भक्ति का, इबादत का मुआवजा (उजरत) आ गया। लो अब तुम्हारा हिसाब करें। फलानी जगह चल रहे थे, इतने कीड़े तुम्हारे पाँव के नीचे आ कर मरे। फलानी जगह यह हुआ। कहने लगा, बख्श दो महाराज जैसे भी बख्शते हो। तो बख्शिश का दरवाजा है भई। अपनी तरफ से वह करो जो उस को – उस लाईन को उल्लंघन न करो भई। फिर दर पर बैठो, वह देगा। जल्दबाजी (उतावली) न करो। जैसे-जैसे बरतन बनता है वह देता है। वह देखता है हमारा बरतन कितना बना है या नहीं ? मगर एक बात जरूरी है कि पहले ही दिन तुम को यह रास्ता दे देता है। Way up करता है। तुम को कुछ पूंजी मिल जाती है। उस की हिदायत के मुताबिक काम करो, दिनों-दिन तरक्की होगी। तुम खुद गवाही दोगे कि ठीक है। बल्कि पहले ही दिन गवाही दोगे कि कुछ है। तो ऐसे महापुरुषों की महिमा गाई जा रही है इसी लिए कहा:

बिन गुर पूरे कोई न पावे ॥ लख कोटि जे करम कमावे॥

बगैर पूरे गुरु के यह चीज नहीं मिलती, करोड़ो कर्म कमा लो। गुरु अमरदास जी को सत्तर-बहत्तर वर्ष की तलाश के बाद गुरु अंगद साहब के चरणों में आना नसीब हुआ तो कहते हैं – 'अब रोस न कीजै।' पहुंच तो गए कि नहीं। पहले क्यों नहीं मिला, यह बात छोड़ दो। तो क्या कहते हैं:

हर की पूजा सत्गुर पूजो।

हरि की पूजा सत्गुरु की पूजा है और फिर कहा कि परमात्मा ने यह fundamental law (कानून) बना दिया है कि बगैर सत्गुरु के मैं नहीं मिलता। यही Christ ने कहा। सब महापुरुष यही कह रहे हैं:

Son knows the father and others whom the son reveals.

बच्चा पिता को जानता है, दूसरे वह लोग जिन को उस का बच्चा इजहार करे। यह बड़ी भारी बख्शिश है।

मकड़ी उतरी तार से पुनि गह चढ़त जो तार।
जा का जा स्यों मन रमयो पहुँचत लगयो न वार।।

मकड़ी की मिसाल देते हैं कि वह ताना बुनती जमीन पर आ जाती है। जब चढ़ना चाहे फौरन चढ़ जाती है। ऐसे ही जिस के साथ मन लगा हो, वहाँ पहुँचते देर नहीं लगती। देखो बिजली की बड़ी तेज रफ्तार है। प्राणों की उस से तेज रफ्तार है। भई सुरत की उस से भी तेज है। मन ही देख लो। सैकंड में कहीं का कहीं फिर कर आ जाता है। अरे मन से भी ज्यादा उस की तेज रफ्तार है। कहते हैं पहुँचते देर नहीं लगती। जैसे ताना तना हो न, मकड़ी फौरन चढ़ जाती है कि नहीं? मिसाल दे कर समझा रहे हैं। तो मतलब क्या कि गुरु कहीं भी हो, नजदीक हो या दूर, उस से कोई फर्क नहीं पड़ता।

Distance makes no difference.

Receptive बनो। बरकत मिलेगी। दरवाजे पर बैठ जाओ। उस को पता है मेरे दरवाजे पर बैठा है। हवाले करो। Repose करो। गीता में इसी बात का उपदेश है। Repose in action कर्म कर के उस के हवाले कर दो।

God helps those who help them selves.

यह कानून है कि परमात्मा उन की मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं। क्या? हुक्म की बजावरी करते हैं दरवाजे पर बैठ कर। फिर repose (हवाले) करे, तब। Effort, कोशिश ही बनी रहे फिर भी रुकावट है। या इस तरह बयान कर लो:

God helps those who do not help them selves.

परमात्मा उन की मदद करता है जो अपनी मदद आप नहीं करते। अगर मदद न करो तो जिस्म नहीं हिलेगा न। मदद करता है तो हिलेगा। Recede करोगे (पीछे हटोगे) वह मौजूद है। वह तुम्हारे अंतर में है भई, दूर नहीं। Receptive होने का सवाल है और कुछ नहीं। किस को जल्दी मिल जाता है। उस के पिछले कर्मों का reaction (प्रतिक्रिया) है। किसी को देर से मिलता है। मिलता सब को है भई। तुम एक अमीर के लड़के हो। अरे भई तुम को देता है कुछ रुपया कमाओ। न भी कमाओ तो अमीर के लड़के तो हो कि नहीं? समझे। उस के हुक्म की बजावरी करो। जैसा वह जीवन बताता है वैसा रखो। Sooner or later तुम्हारा हिस्सा है, मिलेगा। जो नालायक लड़के होते हैं उन का भी हिस्सा पिता रखता है कि नहीं। यह अलेहदा बात है उस को हाथ में न दे, ख्याल तो रहता है कि नहीं ? तो इसी तरह हम उस के नालायक बच्चे हैं, तो भी भरोसा रखो। फिर भी उम्मीद हो सकती है। भागो दौड़ोगे, फिर भी वह तो नहीं छोड़ेगा, कहां तक भागोगे।

I shall never leave thee nor forsake thee till the end of the world.

यह क्राइस्ट कहता है। हजूर फरमाया करते थे। सिख छोड़ जाए तो छोड़ जाए गुरु नहीं छोड़ता। हाँ उस का लंबा रस्सा है जरूर।''

तो यह कलाम है अनुभवी पुरुषों का। सुनने के लिए नहीं, धारण करने के लिए। इंसान गिर-गिर कर सवार होता है। There is hope for everybody बात तो यह है।

तुलसी या संसार में पांच रतन है सार।
साधु संग, सत्गुरु शरण, दया, दीन, उपकार।

अब यह कुछ बतला कर कि शिष्य का गुरु से कैसे नाता होना चाहिए। आगे कहते हैं कि दुनिया में पांच रत्न दुर्लभ हैं। कौन-कौन से? कि साधु संग, साधु की संगत मिलना दुर्लभ है। साधु तो बड़े हैं। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि 55 लाख साधु हैं। इस गति के कहीं 5-7

मिल जाएँ।

लाखन में कोई हैं नहीं कोटिन में कोई एक ॥

और

तेरा सेवक इक अद्दा होर सगले ब्यौहारी।

सारे महापुरुष यह कह रहे हैं। भगवान कृष्ण कहते हैं:

"हजारों में से कोई एक मेरी तरफ चलता है,

ऐसे हजारों चले हुओं में से एक मेरी तरफ पहुंचता है।"

कहाँ रह जाते हैं? इन की झगड़ों में, गिरावटों में। तो फरमाते हैं कि साधु-संग दुर्लभ है। महात्मा तो कई मिलते हैं। सचमुच साधु कहीं कहीं मिलता है। गुरु अर्जन साहब ने एक पूरी अष्टपदी में साधु की महिमा गाई है:

साध प्रभु भिन्न भेद न भाई॥ साध रूप अपना तन धारेया॥

प्रभ जी बसे साध की रसना॥ साध की उपमा तेह गुण ते दूर॥

त्रिगुणातीत अवस्था को पा चुका है। कितने महात्मा इस गति के मिलेंगे ? पिंड से ऊपर जाने वाला महात्मा कोई मिलता है। मैं ऋषिकेश में रहा, पाँच-एक महीने। वहाँ मुझे एक शख्स (व्यक्ति) मिला, जो पिंड से ऊपर जाता था सहस्रार में। सिर्फ एक सब महात्माओं में। Propagandists (प्रचारक) और बाहरी intellectual wrestlers (बुद्धि विचार वाले) बड़े मिलेंगे। सचमुच ऊपर जाने वाले, जड़ से चेतन को अलहदा करने वाले,कहीं-कहीं मिलेंगे। तो अनुभवी को अनुभवी पहचानता भी है, आलिम (विद्वान) बेचारे क्या जाने ? स्वामी जी महाराज ने फरमाया:

हे विद्या तू बड़ी अविद्या संतन को तै कदर न जानी॥

आलिम लोग इन्हें कैसे पहचान सकते हैं? गुरु नानक साहब थे अनुभवी पुरुष। पढ़े-लिखे पंडितों ने, आलिमों ने कहा कि यह कुराहिया है। लोगों की अक्लें बिगाड़ते हैं। तो अनुभवी, अनुभवी को पहचानेगा, शराबी जिस ने उस नशे को पाया है वह आँख देख कर पहचानेगा। आलिम लोग नहीं पहचान सकते। और यह कारण है कि मठों के मठ अलहदा पड़े हैं, एक दूसरे को पहचानते नहीं, जहाँ अनुभवी है, ज़रुर एक दूसरे की आँख को

पहचानता है। कद्र करता है। तो यह तो:

'आशिकों रां मजहबों मिल्लत जुदास्त।'

जो प्रभु भक्तों की फौज है भई उन का मजहब ही निराला है। तो हम सब ने उस प्रभु की फौज में दाखिल होना है भई। यह जितनी समाजें हैं यह उस की recruiting centres हैं भई। इन में से चल कर उस की (प्रभु की) फौज में दाखिल हो जाओ, तुम्हारा कल्याण हो जाए। प्रभु तो किनारे रह जाता है:

चाले थे हरि मिलन को बीच ही अटकेयो चीत॥

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं:

अटक रहे डग डग में। प्रभु मिले कोई साथ समंग में॥

साधु की सोहबत में मिलेगा। तो साधु का मिलना बड़ा दुर्लभ है। तो फिर कहते हैं, सत्गुरु शरण। सत्गुरु की शरण लेना भी बड़ा दुर्लभ है। शरण क्या होती है? किसी को समर्थ जान कर उस के हवाले सब कुछ कर देना। कभी हमें विश्वास आता है, कभी विश्वास जाता है। कभी भाव में आते हैं, कभी अभाव में आते हैं। जहाँ जमीन ही नहीं वहां परमात्मा कहाँ ? मिसाल के तौर पर एक आदमी बीमार है सख्त, लाइलाज हो रहा है। डाक्टर को बुलाते हैं। ''डाक्टर साहब मैं तुम्हारे हवाले हूँ।'' वह जानता है यह लायक डाक्टर है। उस की लियाकत पर भरोसा है। ''महाराज मैं आपके हवाले हूँ। मारो या रखो।''

सपुरदम बतो मायए खेश रा। तो दानी हिसाबे कमो बेश रा॥

इसका नाम है शरण लेना। सत्गुरु मिल भी जाए, शरण लेने वाला कहीं-कहीं मिलता है। शरण वही लेगा जो कहे:

''मौला आदमी बण आया।''

वह आँख खुलेगी। उस को देखेगा। हमारे हजूर फरमाया करते थे- एक बार पूछा उन से कि महाराज आप को हम क्या कहें? फरमाने लगे:

''मुझे तुम पिता समान समझ लो। बजुर्ग समझ लो, टीचर समझ लो। मेरे कहे के मुताबिक छोड़ो पिंड, चलो अंतर। उन मंडलों में जो उस की (सत्गुरु की) शान देखो फिर जो चाहे कह लेना।''

पहले भाई ही समझ ले, बजुर्ग ही समझ ले। यह भी कहते है हम खुदा समझते हैं, जब तक आंख न खुले, खुदा शुदा कोई नहीं समझता। तो सत्गुरु की शरण लेना भी बड़ी दुर्लभ चीज है दुनिया में।

''साधु संग, सत्गुरु शरण, दया....'' दया का भाव भी बड़ा दुर्लभ है। दया उसी पर आती है जो अपना रिश्तेदार है। जिस से प्रेम है। जिस से प्रेम नहीं उस पर दया कहां आएगी? साथ भूखा मर रहा है, घर में ऐश हो रही है। फिर? उस पर दया क्यों नहीं? बच्चों पर ही दया आती है। तो ऐसी cosmopolitan (भेदभाव रहित) दया हो। सब से प्रेम हो। सब के अंतर परमात्मा है। जिस के साथ प्रेम है उस पर दया है। तो कहते हैं दया भी बड़ी दुर्लभ है। राबिया बसरी का जिक्र आता है। वह काबे को जा रही थी हज करने को। रास्ते में एक कुंआ आया। सब ने पानी पिया और चल पड़े। वह भी चल पड़ी। कुएँ के पास ही एक कुत्ता तड़प रहा था, हौंक रहा था, प्यासा मर रहा था। देखा वह यह भी जीव है। तो क्या किया ? काफिला छोड़ दिया। कपड़े उतारे। रस्सी तो थी नहीं। एक दूसरे से बांध कर लटकाया पानी में। पानी की तह तक न पहुँचा, तो अपने बाल काट कर उसकी रस्सी बनाई। कपड़ों से बांध कर लटकाया। कपड़ा भीग गया। पानी पिलाया उस कुत्ते को तो उसे बशारत (आकाशवाणी) हुई कि ऐ राबिया, तेरा हज कबूल हो गया। यह नजरिया (दृष्टिकोण) उन लोगों का है जिन की आंख खुली है। वह सब से प्यार करते हैं। नामदेव थे, खाना पका रहे थे। एक कुत्ता आया। रोटी ले कर भाग चला। पीछे घी की कटोरी लेकर भागे, ''भगवान रूखी न खाओ।'' यह किन की कहानी है। जिन की आंखें खुली है। दया उसी पर आती है। जिस के मायने हैं दया, वह दुर्लभ है भई। जहां गर्ज हो, जहां जरूरत हो, जहां ताल्लुक हो, वहां दया आ जाती है। कहते हैं यह भी दुर्लभ है।

पांच रत्न हैं सार। तीन तो आ गए। आगे और चीजें बयान करते हैं। दीन, दीनता। गरीबी, इन्कसारी humility (नम्रता) अबूदियत, यह भी दुर्लभ है। ऊपर से तो कहता है, महाराज मैं तो दास हूँ। एक महात्मा

आए तो कहने लगे यह तो ठीक है। पीछे कहने लगे, इस के पास न जाना। अपने अपने ही मठों में जकड़े पड़े हैं। ऊपर से बड़ी नम्रता दिखाते हैं। दशम गुरु साहब फरमाते हैं कि *अगर मत्थे टेकने से ही कल्याण है* तो क्या कहते हैं तोपची ताप का गोला चला कर लंबा पड़ जाता है। साष्टांग मत्था टेकता है। अगर मत्था रगड़ने ही से उस की पूजा हो सकती है तो भेड़ तो हमेशा मत्था रगड़ती है। सब बाल उसके झड़ जाते हैं। कहते हैं कि बहुत सिर मारने से प्रेम का नजारा हो तो कहते हैं जिसके सिर में कनखजूरा दाखिल हो जाए वह बहुत सिर मारता है। अरे भई यहां दिली प्रेम का सवाल है। सेन्ट आगस्टन (Saint Augustine) थे। उन से पूछा कि महाराज परमात्मा कैसे मिलता है? क्या चाहिए उस के लिए लबाजमा (जरूरी चीज)? फरमाने लगे, first humility (पहले नम्रता)। भई नम्रता हो तभी न कोई किसी महापुरुष के पास जाएगा, नहीं तो हर एक ही कहता है मैं अमीर हूँ, मैं हाकिम हूँ, मैं आलिम (विद्वान) हूं, फाजिल हूँ, मैं बड़ा पंडित हूँ। वह जानता ही नहीं, मैं बड़ा कुछ जानता हूं। Humility (नम्रता) हो, तभी जाए। आगे जा कर भी महात्मा के पास बैठे, अकड़ कर बैठे रहे – हां, वहां भी लिखा है, उस ग्रंथ में भी लिखा है, मैं जानता हूं, कोई नई बात नहीं, बता रहा। नम्रता वहां भी नहीं आई। जो प्याला सुराही के नीचे होगा, वही भरा जाएगा न। जो ऊँचा रहे? तो कहते हैं second humility (दूसरे नम्रता)। महापुरुष के पास जा कर भी जब तक नम्रता न हो, भई जो कुछ तुम को मालूम है वह तो तुम जानते ही हो न, देखो वहां और चीज क्या मिल रही है? अगर वह हमारे पास है, खुशी है, नहीं तो सीखो, मगर इसी comparison (मुकाबले) ही में वक्त टाल देता है। कहते हैं third humility (तीसरे नम्रता)। कहते हैं अगर किसी चीज की प्राप्ति हो जाए तो फिर नम्रता-भाव हो। जिस दरख्त की शाख पर फल पड़ जाएं, लद जाए, वह शाख झुक कर जमीन के साथ लग जाती है। जो सवार मंजिले-मकसूद पर पहुंच जाता है, वह प्यादा हो जाता है। अरे भई, नम्रता तो संतों का श्रृंगार है, सच्ची बात तो यह है। गुरु नानक साहब जी के हिस्से में, कहते हैं तीन चौथाई नम्रता

उन के हिस्से में आई। मैंने एक नजारा देखा आपस में मिलने का। हमारे हजूर थे, महर्षि शिवव्रत जी महाराज लाहौर में थे, गए मिलने को। वह उन के पांव पड़ते, वह उनके पांव पड़ते। वह कहें तुम पिता समान हो, वह कहें भाई हो तुम बड़े। तो नम्रता यह होती है। दिखावे की बात थोड़े ही है। उन को देख कर रसक (शौक) आता है। पर अंतर लदा हुआ हो, अति नीचा हो न। तो कहते हैं नम्रता भी बड़ी दुर्लभ चीज है दुनिया में।

फिर आगे कहते हैं – उपकार। यह भी दुर्लभ है। तुम ने एक काम किया, उस ने तुम्हारा कर दिया। जहां तुम्हारी गर्ज हुई, उस के लिए कुछ कुर्बानी कर दो, इस का नाम उपकार नहीं। माता बच्चे को पाल रही है, बड़ा हो कर मुझे खिलाएगा। यह भी उपकार नहीं माफ करना। ला गर्ज हो कर जो उपकार हो। और उपकार के भी कई दर्जे हैं। हमारे हजूर एक मिसाल फरमाया करते थे। एक कैदखाना (जेल) है। उस में एक आदमी गया, बड़ा उपकारी था। वहां देखा कि उन (कैदियों) को अच्छा खाना नहीं मिलता। रुपया sanction (मंजूर) कर दिया कि उन को अच्छा खाना दे दो। खाना अच्छा मिलने लग गया। वह वापस आ गया। एक और भाई गया। उस के दिल में बड़ा उपकार का ख्याल था। उस ने देखा कि उन के कपड़े फटे-पुराने हैं, सर्दी लगती है, बुरा हाल है। कपड़े दे दिए कि उन को दे दो। वह भी आ गए। तीसरा एक और गया। उस ने देखा, ये काल-कोठड़ियों में रहते हैं, ventilated houses (रोशनदान वाले घर) नहीं। रुपया sanction (मंजूर) कर दिया कि इन को अच्छे अच्छे मकानात दो रहने को। कुछ amenities provide कर दो (सहूलते दो)। वह भी आ गए। उन्होंने बड़ा उपकार किया, मगर कैदी कैदी ही रहे। एक और भाई गया। उस के पास जेलखाने की कुंजी थी। जाओ भई, निकल जाओ सब। किस का परोपकार बड़ा है ? ऐसा परोपकार भई दुर्लभ मिलता है, दुनिया में, समझे। महापुरुष आते हैं, बिठाते हैं, उपकार करते हैं, आंख खोल देते हैं, चल भई छोड़ पिंजरे को। जन्म-मरण से रिहाई देते हैं, कहते हैं – ये पांच रत्न हैं सार:

साधु संग, सत्गुरु शरण, दया, दीन, उपकार।

ये पांच रत्न दुनिया में दुर्लभ हैं, कहीं कहीं नजर आएंगे, जहां कहीं अनुभवी पुरुष हो।

नीच नीच सब तर गए संत चरण लौ लीन।
जाति के अभिमान से डूबे बहुत कुलीन॥

कहते हैं दुनिया में जब जब संत आते हैं, average class (आम) के लोग बहुत फायदा उठाते हैं। अमीर, आलिम (विद्वान), बड़ी कुल वाले, बड़े हाकिम, यह, वह, कम फायदा उठाते हैं। वे कहते हैं, हम बड़े हैं, हम क्यों जाएं? मगर याद रखो, अनुभवी पुरष तो आजाद पुरुष हैं।

आं बुते अयार दर बद खुद नजूद मी आयद।
ना बज अरमी ना बज वरमी ना बाजर मी आयद॥

अगर वह आए तो अपने आप आ जाए, न आए तो न जरियों से काबू में आता है, न जोरों से, न रुपए से खरीदा जा सकता है। कबीर साहब थे। धर्मदास जी के यहाँ गए, यह जानते हैं न किस ने काम करना है, यह कोई प्रैजीडैंट (प्रधान) नहीं जो पब्लिक ने चुन लेना है, यह प्रभु की तरफ से है। Commission (परवाना) मिलता है। गए, जाकर आवाज दी। खाना खा रहे थे। घर वाली ने कहा, ठहर जाओ। उस ने देखा, कोई साधु आया है। ठहर गए, फिर आवाज दी। कहने लगी, ठहर जाओ। फिर चुप कर रहे। तीसरी बार फिर आवाज दी। कहने लगी, तुम बड़े पापी हो, बार-बार आवाज देते हो। मैं कहती हूँ ठहर जाओ। तो कहने लगे, पापी मैं नहीं पापी तुम हो। देखो लकड़ी में कीड़े जल रहे हैं। इतना कह कर चले गए। देखा तो सचमुच लकड़ी में कीड़े जल रहे थे।

धर्मदास ने कहा, तुने बड़ा जुल्म किया। वह कोई महापुरुष था, चला गया। तुने निरादर किया, वह चला गया। कहने लगी, कोई बात नहीं। गुड़ पर बहुत मक्खियाँ आती हैं। याद रखो, किसी महापुरुष के लिए कोई बात जबान से निकालो तो मुंह पर थप्पी रख के निकालो। क्या पता, क्या हो? कहते हैं उन के पास 14 करोड़ रुपया था। बड़े यज्ञ किए उस शहर में भी, सब तीर्थों पर भी। 14 करोड़ के 14 करोड़ रुपए खर्च कर दिए।

बड़े साधु महात्मा आए मगर वह महात्मा न आए। अब घर में खाने को भी न रहा अब क्या करें? डूब मरो। गए डूब मरने को गंगा के किनारे, देखा तो सामने खड़े हैं कबीर साहब। कहते हैं महाराज मैंने आप की तलाश में यह किया, वह किया, सारा रुपया बरबाद कर दिया आप नहीं आए। कहते हैं अगर मैं उस वक्त आ जाता तो गुड़ पर मक्खियां आ जाती समझे। तो कहते हैं संत महात्मा जब आते हैं, वह न धन से खरीदे जाते हैं न जोरों से काबू में आते हैं, न जारियों से ही आते हैं। भक्ति भाव से आते हैं। इस लिए average (आम) तबके के जो लोग हैं वह बहुत फायदा उठाते हैं बड़े मरतबों वालें, कुलीन जातों वाले, ये कम फायदा उठाते हैं। हमारे हजूर थे। कई बार कहते कि अमीर लोग आते हैं। वह कहते हैं मैं उन को लेने के लिए जाया करूं। खैर, उन का यह ख्याल था कि परमात्मा अमीरों को इज्जत देता है तो हमें भी इज्जत देनी चाहिए। मगर याद रखो वे (संत-महात्मा) किसी के बंधे हुए नहीं होते। तो कहते हैं जब जब संत दुनिया में आते हैं तो average (औसत) तबके के लोग बहुत फायदा उठा जाते हैं। जाति के अभिमान में, वे जो कुलीन लोग हैं, डूब मरते हैं, जन्म बरबाद कर जाते हैं।

आप को पता है न, रविदास जी चमार थे। राजा पीपा था। सुना था कि बड़े महापुरुष हैं, मगर आने से घबराता था। लोग क्या कहेंगे, हैं, चमार के यहाँ चला गया बादशाह हो कर। अब सुनते सुनते दिल में आया, चला फिर ही आऊँ। शाम के वक्त गया वहां, किस वक्त? जिस वक्त लोग देखें नहीं। भागे भागे गए उस वक्त। वह चमड़ा धो रहे थे। ''महाराज, मैं आ गया हूँ।'' कहने लगे, अच्छा, बड़ी खुशी की बात है। वह कहने लगे, लो भई, आया है, इस को कुछ रंग दे दो, नशा दे दो। तवज्जो ही होती है न। वह चमड़ा धो रहे थे। लो भई, अमृत पी लो। महात्मा का रोब बड़ा होता है न भई, ना न कर सके। चुल्लू भरी ऐसे कर लिया, पिया नहीं, कुर्ते में चला गया। चमड़े का पानी था, दाग लग गया। आज मैं भ्रष्ट हो गया था। शुक्र है मैं बच गया। आ कर धोबी को बुलाया। जल्दी करो इस कपड़े को धो दो। दाग लगे थे। उस ने अपनी लड़की को दिया, इस

को चूस लो, दाग उतर जाए, फिर धो दो। खैर चूसा। उस में तवज्जो थी न। धोबी की लड़की की दिव्य चक्षु खुल गई, महात्मा बन गई, मशहूर हो गई भई। वाह वाह, धोबी की लड़की बड़ी महात्मा है। बादशाह तक भी खबर पहुँची। उस ने कहा, चलो हम भी दर्शन करेंगे। चमार तो नहीं न, हमारे धोबी की लड़की है। गए। आगे जब गए तो लड़की हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई। कहने लगा कि देख लड़की मैं तुझे महात्मा समझ कर तेरे पास आया हूँ। इस लिए तुझे खड़ा नहीं होना चाहिए कि मैं बादशाह हूँ। कहने लगी, बादशाह, मैं तुझे बादशाह समझ कर के खड़ी नहीं हुई। मुझे जो चीज मिली है, तेरी कृपा से मिली है। वह कैसे? सारा किस्सा सुनाया। गए (रविदास जी के पास), जाहिरा गए कि महाराज मेहर करो। रविदास जी बोले, अब कमाई करोगे तो मिलेगी। तो यह बख्शिश की चीज है। Average (औसत) तबके के लोग बहुत फायदा उठा जाते हैं।

जैसो तैसो पातकी आए गुरु की ओट।
गांठी बांधी संत से न परखे खर खोट॥

कहते हैं तुम पापी से पापी हो तो भी घबराओ नहीं। जाओ संतों के चरणों में, अनुभवी पुरुष के पास जाओ। वह खोटे खरे को नहीं परखता है। कबूल कर लेता है, जाओ सही। हमारे हजूर थे। कई बार लोगों ने आना तो कहना कि महाराज, हम ने आप की बड़ी निंदा की है। कहते, मेरे तक नहीं पहुंची। वे हमारा खरा खोटा नहीं परखते। जाओ भई। आग में जो चीज पड़ जाएगी, सब गलाजत (गंदगी) सड़ (जल) जाएगी। अनुभवी पुरुष के पास अगर पापी जाए, वह पापियों के लिए आता है। जो लोग अपने आप को पुन्नी (पुण्यवान) समझते हैं, वे भी बंधन में हैं। भगवान कृष्ण ने फरमाया:

"नेक और बद (बुरे) कर्म जीव को बांधने के लिए एक समान हैं जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी।"

जब तक नेहकर्म (निष्कर्म) न हो:

'स्वर्ग नर्क फिर फिर अवतार।'

असल बंधन तो वह भी है। कहते हैं कि अगर तुम पापी भी हो तो there is hope for everybody जाओ किसी अनुभवी पुरुष के पास, तुम पापी नहीं रहोगे। बाल्मीकि डाकू थे। संतों की शरण में जा कर महर्षि वाल्मीकि बन गए। हजूर के वक्त भी एक उधम सिंह था डाकू। जो लोग हजूर के पास जाया करते थे उन को दरिया में गोते दिया करता, खबरदार वहां न जाना। जब नजर से नजर मिली, दया हुई तो फिर उस ने कपड़ा मुंह पर रखना, तीन तीन घंटे तारीफ करते चले जाना। तो भई किसी हालत में हो, घबराने की जरूरत नहीं। जाओ किसी अनुभवी पुरुष के पास, पापी से पापी हो तो भी। Hate the sin but love the sinner. पाप से तो घृणा करो, पापी से प्यार करो। अगर पापी से प्यार नहीं करोगे उस की मैल कैसे धोई जाएगी। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि हर इंसान के लिए उम्मीद है चाहे वह कैसा ही गया गुजरा हो। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में इसी का reference (उद्धरण) दिया है:

'जो दुराचारी से दुराचारी भी मेरी शरण में आए फिर वह दुराचारी नहीं।'

तो सारे महापुरुष यही कहते हैं। मजमून (विषय) लंबा है, अभी और दोहे हैं। बाकी फिर सही।

***